जीवन वैभव

दीपावली विशेषांक

वर्ष 40 ; अंक 4 ; अक्टो से दिसम्बर 2026

पांच दिवस का पर्व समूह दीपावली

ISO cetified 9001- 2015

ग्रहों की शुभत्व के लिए
रत्नधारण

पर्यावरण की
सामाजिक स्वास्थ्य
और सम्पूर्ण विश्व
को आवश्यकता

पुराणों और संहिता में
नक्षत्र विवेचन

मीन लग्न की
विशेषताएं

त्रैमासिक भविष्य
व्रतपर्व एवं शुभ मुहूर्त तथा
अन्य स्थाई स्तम्भ

मूल्य: 50 रु.

समृद्धिदायक है महालक्ष्मी अष्टक



नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते!
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
नमस्तेतु गरुदारुढै कोलासुर भयंकरी!
सर्वपाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी!
सर्वदुख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भक्ति मुक्ति प्रदायनी!
मंत्र मुर्ते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
आध्यंतरहीते देवी आद्य शक्ति महेश्वरी!
योगजे योग सम्भुते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
स्थूल सुक्ष्मे महारोद्रे महाशक्ति महोदरे!
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
पद्मासन स्थिते देवी परब्रह्म स्वरूपिणी!
परमेशी जगत माता महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
श्वेताम्भर धरे देवी नानालन्कार भुषिते!
जगत स्थिते जगंमाते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्रं य: पठेत भक्तिमान्नर:!
सर्वसिद्धि मवाप्नोती राज्यम् प्राप्नोति सर्वदा!!
एक कालम पठेनित्यम महापापविनाशनम!
द्विकालम य: पठेनित्यम धनधान्यम समन्वित:!!
त्रिकालम य: पठेनित्यम महाशत्रुविनाषम!
महालक्ष्मी भवेनित्यम प्रसंनाम वरदाम शुभाम!!

जीवन वैभव

परिवार की ओर से





सपादक
डॉ. प. हेमचन्द्र पाण्डेय

नवरात्रि एवं दीपावली

पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार
की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना वर्ष : 40, अंक-4, अक्टूबर-दिसम्बर 2026

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एस. शुक्ल

सलाहकार मण्डल
डॉ.श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662
www.jeevanvaibhav.in

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति - 50 रूपये	वार्षिक - 200 रूपये
त्रैवार्षिक - 500 रूपये	आजीवन - 5000 रूपये

ISO9001:2015
(Quality management system)
QCAS-JEV-22-0514738

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	सम्पादक की कलम से	3
3.	वैभव दर्शन	5
4	डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय शिखर सम्मान से विभूषित	6
5	जब ज्योतिषी ने राजा को मृत्यु का समय बताया	7
6	पंच महापुरुष योग में उत्पन्न जातकों का भविष्यफल	8
7	मीन लग्न की विशेषताएं एवं सूर्यादि ग्रहों का प्रभाव	10
8	बुध-गुरु युति	11
9	ग्रहों के फलित में शुभत्व के लिए लग्न अनुसार रत्न धारण	13
10	गोचर वेध स्थान	14
11	पर्यावरण और सामाजिक स्वास्थ्य केवल प्राणियों के लिये ही नहीं संपूर्ण सृष्टि के लिये महत्वपूर्ण	15
12	दाम्पत्य जीवन का ज्योतिषीय विवेचन	18
13	जानें, बच्चे घर से क्यो भागते हैं	20
14	धन प्रयोग या धन निवेश कब करें-कब न करें	21
15	काल गणना (ज्योतिष तत्वाङ्ग)	22
16	प्राणवायु का महत्व और प्राण और उसका स्वरूप क्या है जाने?	24
17	आत्मविश्वास बढ़ाने के ग्रह योग	25
18	पुराणों तथा संहिता में नक्षत्र विचार	26
19	पांच दिन का पर्व समूह दीपावली	30
20	उत्तम फलित विवेचन के लिए ग्रहों की अवस्था ज्ञान	32
21	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
22	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
23	क्या कमजोर चंद्रमा व्यक्ति को बीमार बनाता है? - ज्योतिषीय दृष्टिकोण..	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011 (म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना



भवानि अष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्नदाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 1॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरु
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त :
कुसंसारपाश प्रबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 2॥

न जानामिदानं न च ध्यान योगं
न जानामि तन्त्रं नच स्तोत्र मन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यास योगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 3॥
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थ
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मार्त
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 4॥
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 5॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 6॥
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 7॥
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः
सदा जाड्य वक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं
त्वमेका भवानि ॥ 8॥





सम्माननीय पाठक बंधु

सहृदय हरिस्मरण

अक्टोबर से दिसम्बर 2026 का अंक आपको प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता है क्योंकि इस अवधि में ही हमारी सनानत संस्कृति के मुख्य पर्व शारदीय नवरात्री, शारदोत्सव पूर्णिमा और पांच दिवस का पर्व दीपावली, गुरूनानक जयन्ती, कार्तिक पूर्णिमा आदि पर्व भी इस त्रैमास में आ रहे हैं।

दीपावली केवल प्रकाश पर्व ही नहीं है बल्कि आरोग्य, ऐश्वर्य और आस्था के संगम का प्रतीक है। कार्तिक मास की अमावस्या की रात्री में जलने वाले दीप हमारे भीतर के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान और शांति का प्रकाश फैलाते विद्वान लेखकों के आलेख इस अंक में सम्मिलित किए हैं उनमें समाज सेवा में अग्रणी रहे अनेक पुस्तकों के लेखक पं. रमेश शर्मा जी, श्री एस.एस.,लाल श्री अजय गुप्ता श्यामानन्दी, श्री अखिलेश्वर पाण्डेय के आलेख पठनीय एवं अनुकरणीय है। विशेष कर श्री शर्मा जी ने पर्यावरण और सामाजिक स्वास्थ्य पर बल देते हुए पर्यावरण को केवल प्राणियों ही नहीं सम्पूर्ण सृष्टि के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए जीवनोपयोगी और समाज उपयोगी जानकारी अपने आलेख में दी है।

हमारा प्रयास सदैव यही रहा है कि सामाजिक रूप से स्वस्थ्य मन और स्वस्थ्य शरीर रखते हुए जीवन में ज्योतिष विषय के मनन से सही दिशादर्शन करके धनात्मक निर्णय लेकर सुखी जीवन रहे।

इस त्रैमास में आने वाले नवरात्री, दीपावली आदि पर्व की सभी पाठकों को शुभकामनाएं।

सभी सदस्य नियमित रूप से जीवन वैभव से जुड़े रहकर समाज के लिए अपना महत्वपूर्ण धनात्मक योगदान देते रहे यही हमारी शुभेच्छाएं सदैव रहेंगी।

आपका सदैव शुभेच्छु
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक, जीवन वैभव

अमृत घट



1. किसी मनुष्य की बुराई पर विश्वास मत करो, जब तक तुम स्वयं उसे देख न लो और यदि बुराई सचमुच देखने में आए भी तो उसे भूल जाओ, किसी पर प्रकट न करने लगो।

- स्वामी विवेकानंद

2. जैसे पानी में उत्पन्न होकर पानी में ही नष्ट होने वाले बुलबुलों पर किसी का ध्यान नहीं जाता उसी प्रकार धन से हीन व्यक्ति सामने रहते हुए भी लोगों की दृष्टि में नहीं आते।

- आचार्य विनोबा

3. शिष्टाचार शारीरिक सुंदरता की कमी को पूर्ण कर देता है वही व्यक्ति सर्वाधिक सुंदर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं।

- स्वेट मार्डन

4. आवश्यकता कम करें, आवश्यकता जितनी कम होगी उतना ही अधिक सुख होगा।

- स्वामी रामतीर्थ

5. अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो वह कंगाल हो जाता है।

- चाणक्य

6. सबसे उत्तम दान वह है जो आदमी को इस योग्य बना दे कि वह दान के बिना काम चला सके।

- महात्मा गांधी

7. धन के मद में मतवाला मनुष्य गिरे बिना होश में नहीं आता।

- भृर्तृहरि

8. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान कोई दूसरा पाप नहीं।

- लोकमान्य तिलक

9. प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्य का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है।

- भगवान बुद्ध

वैभव दर्शन

समय की कीमत समझे उसे सदा महत्व दें



स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

समय को महत्व देना बहुत आवश्यक है क्योंकि अवसर सदैव समय की कद्र करने पर ही मिलते हैं। यह बात पूर्व संस्थापक सम्पादक देवलोकवासी स्व. रामचन्द्र जी पाण्डेय ने कही थी- सम्पादक

जीवन में हमेशा समय की कद्र करना चाहिए यदि समय पर आपने अपने आप को स्वस्थ्य नहीं रखा शिक्षा प्राप्त करके योग्यता हासिल नहीं की तो एक उम्र निकलने के बाद केवल पछतावा ही शेष रह जाता है कहा गया है कि

समय बीति फिर का पछताना

समय निकलने के पश्चात सिर्फ पछताने से कुछ भी नहीं हो सकता। समय की हमेशा कीमत करना चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। विद्यार्थी काल में यदि अध्ययन नहीं किया तो रोजी रोजगार में भी योग्यता के नहीं होने से पिछड़ना पड़ सकता है अपने स्वयं के कार्य में भी ज्ञान की जरूरत तो होती ही है। प्रत्येक कार्य में समय को मुख्यता नहीं दी आलस्य मय जीवन बनाया तो निष्क्रियता का बोल बाला होकर उम्र बीतने के साथ-साथ समय चूकने के पश्चात फिर कुछ नहीं हो सकता।

कई लोग असाधारण अवसरों की बाट देखा करते हैं किंतु वास्तव में कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता छोटे से छोटे अवसर का समय पर उपयोग करने से अपनी बुद्धि को उसमें लगा देने से वह छोटा अवसर भी बड़ा हो जाता है अतः समय पर अवसर को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन का प्रत्येक पल उपयोगी है उसका आकलन करना सीखना चाहिए।

जीवन के जो क्षण व्यतीत हो गए उन्हें हम न तो सोने चांदी जवाहरात से खरीद सकते हैं एवं न हीं किसी प्रकार से वे लौट सकते हैं।

हमारे जीवन के समय में से यदि हम आराम करने का समय, शारीरिक अस्वस्थता का समय, पारिवारिक अथवा सामाजिक दायित्व निर्वहन का समय आदि की गणना करते हुए कम करें तो हम पाएंगे कि हमारे पास समय कितना शेष बचता है? यह समय बहुत कम बचता है, जिसे हम कुछ रचनात्मक कार्य करने में लगा सकें। इसलिए आवश्यक है कि हमें अपने जीवन में आवश्यक कार्य के अतिरिक्त कुछ रचनात्मक कार्यों के लिए समय निकालना चाहिए। हम अपने जीवन में यदि कुछ बुराईयों में घिर गए हों तो उन्हें दूर करते हुए भले कार्यों में जीवन जीने के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए। बुरे कार्य क्या हो सकते हैं। उन्हें हम अपने अन्तर्मन से स्वयं सोचें। उन्हें व्यक्त कर आपको बताने की जरूरत नहीं है, क्योंकि व्यक्ति अपने आपके लिए खुद पारखी है। वह अपने सही एवं गलत कार्यों को भी भलीभाँति जानता है। अतएव स्व-प्रेरणा लेकर अपने शुभ कार्यों की वृद्धि करें अपने द्वारा किए जा सकने वाले शुभ कार्यों से संतुष्ट होकर प्रतिदिन अपने व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने वाला कार्य करने की आदत डालना चाहिए।

ज्योतिषी प्रतिव्यक्ति की समस्या का सही फलित निदान अच्छे सलाहकार के रूप में करे - ज्योतिषाचार्य पाण्डेय



भारतके कांस्टीट्यूशन क्लब दिल्ली में लीडरशीप कान्क्लेव राष्ट्रीय ज्योतिष एवं रुद्राक्ष अनुसंधान संस्थान द्वारा 19 जुलाई 26 को आयोजित संस्था के अध्यक्ष आचार्य पंकज त्रिवेदी द्वारा की गई। इस लीडरशिप कांक्लेव में डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय ने उक्त बात उद्बोधन मे व्यक्त की और कहा कि ज्योतिषी को चाहिए कि वह ज्ञानवान ; सद्निष्ठा तथा चरित्रवान होकर समाजसेवा के उद्देश्य से दिशादर्शक के रूप में सही फलित कथन और मार्गदर्शन । जिसेकरने से वेदों का नैत्र ज्योतिष शास्त्र एवं ज्योतिषी दोनों सम्मान के पात्र होते हैं ।लगातार बढ़ रहे ज्योतिष में भ्रामक फलित करने से समाज में अविश्वासकी भावना आने लगी है इसको दूर करने एवं फलित ज्योतिष विषय मे निष्ठावान और सही मार्गदर्शक के रूप मे ज्योतिषी की समाज को आवश्यकता है। डॉक्टर पांण्डे ने उद्बोधन में विचार व्यक्त करते समय विश्वविख्यातज्योतिषी श्री के ए.दुबेपद्मेशजी ;इंडिया टीवी में फलित करनेवाले पंडित इंदुप्रकाश मिश्रजी भी इसआयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर भोपाल से प्रकाशित जीवन वैभव के संपादक डॉ हेमचंद्रपांडेय को संस्था का राष्ट्रीय सलाहकार नियुक्त करते हुए। मुख्य अतिथि द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट से सम्मानित किया तथा सहायक सम्पादक आशुतोष पाण्डेव को ज्योतिष एवं वास्तु अवार्ड से सम्मानित किया ।

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय शिखर सम्मान से विभूषित



विश्वप्रसिद्ध ज्योतिषी प के ए दुबे पद्मेश के द्वारा दुर्गा प्रसाद विद्या निकेतन कानपुर में आयोजित 76वां राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन के अंतर्गत सौमित्र दुबे फाउंडेशन द्वारा डॉक्टर हेमचंद्र पांडेयको फलित ज्योतिष कार्य में60 वर्षों से दी जारही समाज की सेव ाको दृष्टिगत रखते हुए लाइव टाइम अचीवमेंट का शिखर सम्मान दिनांक 23 अगस्त 2026 को कानपुर में उत्तर प्रदेश के राज्य सभा सदस्य एवं पूर्व उपमुख्य मंत्री तथा वर्तमान में उपराज्यपाल अण्डमानद्वीप समूह श्री दिनेश शर्माजी तथा प के.ए दुबे पद्मेशजी के करकमलों द्वारा प्रदाय किया गया। इस अवसर पर इंण्डिया टीवी के प्रख्यात ज्योतिषी श्रीइन्दुप्रकाश मिश्रा; आजतक चेनल के श्री शैलेन्द्र पाण्डेय; ज्योतिष गुरु श्रीपवनसिन्हा; हिमाचल उत्तरांचल से आए हस्त रेखासे सही जन्मांङ्ग बनाने वाले पं लेखराज शर्मा ; वास्तुविद सतीश शर्मा जी जयपुर तथा आचार्य शुभेश शर्मन दिल्लीकी उपस्थिति में यह शिखर सम्मान प्राप्त हुआ।

जब ज्योतिषी ने राजा को मृत्यु का समय बताया



संकलन
आचार्य हृदयानन्द राव

एक बार एक राजा के राज्य में एक वृद्ध ज्योतिषी रहता था। वह केवल ग्रहों की गणना ही नहीं करता था, बल्कि शास्त्रों का गहरा ज्ञाता भी था। दूर दूर से लोग अपनी जन्मकुंडली लेकर उसके पास आते और अपने जीवन के विषय में मार्गदर्शन लेते। उसकी विशेषता यह थी कि वह भविष्य बताने से अधिक लोगों को यह समझाता था कि जीवन में आने वाली परिस्थितियों का सामना किस प्रकार करना चाहिए।

एक दिन पड़ोसी राज्य का राजा उसके पास पहुँचा। उसने अपनी जन्मकुंडली सामने रखी और कहा, 'आचार्य, मेरे जीवन में ऐसा क्या लिखा है जिसे जानना मेरे लिए सबसे आवश्यक है? '

ज्योतिषी ने कुंडली का अध्ययन किया। उसकी आँखें कुछ क्षणों के लिए गंभीर हो गईं। उसने गणना दोबारा की, फिर पंचांग देखा और अंततः बोला, 'राजन, आपकी आयु में एक अत्यंत कठिन समय दिखाई देता है। आने वाले कुछ महीनों में आपके जीवन पर बड़ा संकट आ सकता है। '

राजा चिंतित हो गया। उसने पूछा, 'क्या मैं उस संकट को टाल सकता हूँ?'

ज्योतिषी ने उत्तर दिया, 'जो प्रारब्ध में है, उसे केवल इच्छा से टाला नहीं जा सकता। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि मनुष्य हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाए। उचित कर्म, सावधानी, प्रार्थना और धर्माचरण करना आपका पुरुषार्थ है। परिणाम क्या होगा, यह ईश्वर की व्यवस्था पर निर्भर है। '

राजा ने उस दिन से अपने जीवन में बहुत सावधानी बरतनी शुरू कर दी। उसने सुरक्षा बढ़ा दी, यात्राएँ कम कर दीं और अनेक धार्मिक अनुष्ठान करवाने लगा। लेकिन उसके मन में एक भय लगातार बना रहा कि कहीं वह वही दिन तो नहीं आ गया जिसका संकेत ज्योतिषी ने दिया था।

कुछ महीनों बाद वह फिर उसी ज्योतिषी के पास पहुँचा और बोला, 'आचार्य, आपने संकट बताया था। मैंने अपनी ओर से हर संभव सावधानी रखी। अब बताइए, क्या वह संकट टल गया?'

ज्योतिषी मुस्कुराया और बोला, 'राजन, यही प्रश्न सबसे कठिन है। आपको कैसे पता कि संकट टला है? '

राजा चुप हो गया।

ज्योतिषी ने कहा, 'संभव है कि वही संकट आपके जीवन में आया हो और आपकी सावधानी ने उसका स्वरूप बदल दिया हो। संभव है कि जो घटना मृत्यु का कारण बन सकती थी, वह केवल एक छोटी दुर्घटना बनकर रह गई हो। यह भी संभव है कि आपने जो सावधानी बरती, वह भी आपके प्रारब्ध का ही हिस्सा रही हो। '

राजा ने आश्चर्य से पूछा, 'तो फिर मनुष्य के पुरुषार्थ का क्या अर्थ हुआ? यदि सब कुछ पहले से ही निश्चित है, तो हमें प्रयास क्यों करना चाहिए? '

ज्योतिषी ने पास रखा एक दीपक उठाया और कहा, 'राजन, मान लीजिए किसी कमरे में अंधेरा होना ही है। अब आपके सामने दो विकल्प हैं। आप अंधेरे में बैठ सकते हैं या दीपक जला सकते हैं। दीपक जलाना भी आपके जीवन की उसी व्यवस्था का हिस्सा हो सकता है और अंधेरे में बैठे रहना भी। लेकिन मनुष्य का धर्म क्या है? अंधेरा देखकर दीपक जलाने का प्रयास करना। '

राजा ध्यान से सुनता रहा।

ज्योतिषी ने आगे कहा, 'ज्योतिष आपको यह दावा नहीं करता कि आप ईश्वर की लिखी हुई व्यवस्था को अपनी इच्छा से बदल देंगे। ज्योतिष केवल समय और संभावित परिस्थितियों के संकेत देता है। उन संकेतों को समझकर उचित कर्म करना आपका पुरुषार्थ है। और उस कर्म का अंतिम फल क्या होगा, वह आपके हाथ में नहीं है। '

फिर ज्योतिषी ने राजा की ओर देखते हुए कहा, 'याद रखिए राजन, किसान के हाथ में बीज बोना है, खेत तैयार करना है और पानी देना है। वर्षा होगी या नहीं, कब होगी और कितनी होगी, यह उसके अधिकार में नहीं। लेकिन इस कारण किसान खेती करना छोड़ नहीं देता। '

राजा की आँखों से भय समाप्त हो चुका था। उसने पहली बार समझा कि ज्योतिष का उद्देश्य मनुष्य को भयभीत करना नहीं, बल्कि उसे समय की प्रकृति समझाकर अधिक सजग बनाना है।

उस दिन जाते समय उसने ज्योतिषी से अंतिम प्रश्न पूछा, 'आचार्य, यदि मेरे जीवन में जो होना है वह होकर रहेगा, तो फिर मुझे भविष्य जानने की आवश्यकता ही क्या है? '

वृद्ध ज्योतिषी मुस्कुराया और बोला, 'भविष्य जानना इसलिए आवश्यक नहीं कि आप हर घटना को रोक देंगे। भविष्य को समझना इसलिए उपयोगी है कि जब समय आपके सामने अपनी परीक्षा लेकर आए, तब आप अज्ञान और भय से नहीं, बल्कि विवेक, धैर्य और धर्म के साथ उसका सामना करें। '

शायद यही ज्योतिष का सबसे गहरा अर्थ है। ग्रह परिस्थितियों का संकेत दे सकते हैं, प्रारब्ध अपना फल दे सकता है और ईश्वर अंतिम व्यवस्था का स्वामी हो सकता है। लेकिन उस पूरी व्यवस्था में हमारा पुरुषार्थ भी एक आवश्यक कड़ी है। हमें परिणाम का अहंकार नहीं करना चाहिए और न ही परिस्थिति के सामने निराश होकर बैठ जाना चाहिए। हमारा अधिकार कर्म पर है, फल पर नहीं।

क्योंकि कई बार हम सोचते हैं कि हमने भाग्य बदल दिया, जबकि सत्य यह भी हो सकता है कि भाग्य ने हमें वही कर्म करने के लिए प्रेरित किया हो जिसके माध्यम से उसका लिखा हुआ फल हमारे जीवन में प्रकट होना था।

पंच महापुरुष योग में उत्पन्न जातकों का भविष्यफल



आचार्य सुरेश शर्मा

इस विषय पर आगे बढ़ने से पूर्व सर्वप्रथम यह जानना बहुत आवश्यक हो जाता है कि वास्तव में पंच महापुरुष योग किसे कहते हैं तथा यह जातकों की जन्म कुण्डलियों में कैसे निर्मित होता है ? इस बारे में महर्षि पराशर ने अपनी कालजयी रचना बृहत् पाराशर होरा शास्त्र के पंचमहापुरुष लक्ष्यणाध्यायः में बताया है कि यदि मंगलादि पाँच तारा ग्रह बलवान होकर स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री होकर केन्द्र में स्थित हों तो मंगल से रुचक, बुध से भद्र, गुरु से हंस, शुक से मालव्य एवं शनि से शश नामक महापुरुष योग बनता है। लेकिन इन सभी सम्बंधित ग्रहों का बली होना अति आवश्यक है। इन योगों में उत्पन्न सभी पुरुष महान अर्थात् प्रतिष्ठित व सुप्रसिद्ध आदि होते है। वैसे भी पंचमहापुरुष योग का शाब्दिक अर्थ है पाँच प्रकार के महापुरुष। ये योग पाँच प्रकार के होते हैं, जो कि कमशः इस प्रकार हैं :-

1. **रुचक योग**
2. **भद्र योग**
3. **हंस योग**
4. **मालव्य योग**
5. **शश योग**

रुचक योग

कुण्डली में रुचक योग कैसे निर्मित होता है तथा इसके फल किस प्रकार के होते है, इस पर भी चर्चा करनी आवश्यक प्रतीत होती है। अतः यदि कुण्डली में मंगल लग्न से केन्द्र में स्वराशि मेष अथवा वृश्चिक या उच्च का हो अथवा मूल त्रिकोण राशि में हो तो रुचक योग निर्मित होता है। अर्थात् इसमें सम्बंधित ग्रह का बली होना अति आवश्यक है। इस योग द्वारा किस प्रकार के फल प्रदान किए जाते हैं, उनका विवरण इस प्रकार है :-

फल :- रुचक योग में उत्पन्न होने वाले जातक को किस प्रकार के फल प्राप्त



होते है, इस बारे में भी संक्षेप में वर्णन किया गया है। सामान्यतः रुचक योग में पैदा हुआ जातक साहसी, बलवान तथा पराकमी होता है। वह शारीरिक रूप से काफी सुदृढ़ होता है। वह राजा अथवा सेनापति आदि भी हो सकता है। उसका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है। वह दीर्घायु एवं धनवान होता है। ऐसा जातक सौभाग्यशाली तथा उत्तम गुणों से भरपूर होता है। वह प्रसिद्ध ग्रंथों का ज्ञान रखने वाला होता है। लेकिन इस योग वाले जातक पर मंगल ग्रह के गुणों का प्रभाव भी रहता है। वह सेनापति अथवा आक्रमणकारी भी हो सकता है। जातक आक्रामक प्रवृत्ति वाला हो सकता है। परंतु वह देश भक्त शासक होता है अथवा उसके समकक्ष भी हो सकता है। रुचक योग वाला जातक देश-विदेश में भी खूब नाम कमाता है। इसके अतिरिक्त ऐसा जातक अपने देश की सांस्कृतिक सभ्यता के लिए भी सतत प्रयासरत रहता है।

भद्र योग

भद्र योग बुध से बनने वाला योग है। बुध बुद्धि का कारक होता है। बुध के नैसर्गिक स्वभाव के साथ भद्र योग का सम्बंध होता है। जातक अल्पभाषी होता है। भद्र योग कुण्डली में उस समय निर्मित होता है जब कुण्डली में बुध लग्न से केन्द्र में या स्वराशि मिथुन अथवा कन्या में या अपनी उच्च राशि कन्या में या मूल त्रिकोण राशि में स्थित हो।

फल :- भद्र योग में उत्पन्न होने वाला जातक अपने सगे-संबंधियों की सहायता करने वाला होता है। वह विद्वानों द्वारा प्रशंसित तथा मधुर वाणी वाला होगा। वह धन-धान्य से भी सम्पन्न होगा। योगशास्त्र का ज्ञाता तथा सात्विक आचार-विचार वाला होता है ! ऐसा जातक दीर्घायु होता है।

हंस योग

हंस योग गुरु से बनता है। जब गुरु केन्द्र में स्वराशि धनु अथवा मीन या उच्च राशि कर्क में हो या मूल त्रिकोण राशि में स्थित हो तो हंस योग बनता है।

फल :- हंस योग में उत्पन्न जातक हंस के समान आवाज वाला सुदर मुखाकृति एवं शरीर वाला तथा अपने मित्रों एवं परिवार के सदस्यों का हितैषी तथा प्रिय होता है। वह ज्ञानवान,



चरित्रवान, आदर्शवादी, उदार प्रवृत्ति वाला तथा अध्यात्मिक होता है। वह सदैव नैतिकता का पक्षधर होता है। पानी में कीड़ादि करने में रुचि रखने वाला तथा संसार के सभी प्रकार के सुख भोगने वाला होता है। हंस योग सदैव चर लग्न व द्विस्वभाव लग्न में ही संभव है। स्थिर राशियों के लग्न में हंस योग नहीं बनता है।

मालव्य योग

यह शुक से बनने वाला योग है। जब शुक लग्न से केन्द्र में स्वराशि वृषभ या तुला या उच्च राशि मीन में स्थित हो या मूल त्रिकोण राशि में हो तो मालव्य योग बनता है।

फल :- शुक की प्रवृत्ति अनुसार मालव्य योग जातक को धनवान तथा पत्नी एवं बच्चों की ओर से सुखी बनाता है। ऐसा जातक प्रसिद्धि तथा नाम अर्जित करने वाला होता है। शुक भौतिक सुखों का कारक होता है। यह उसी के अनुसार ही जातक को फल प्रदान करता है। जातक स्पष्ट विचारों वाला तथा प्रसिद्ध विद्वान होता है। शुक के स्वभाव के अनुसार मालव्य योग वाला जातक दृढ़ निश्चयी तथा धनवान होता है। उसे प्रसिद्धि तथा बच्चों का सुख आदि भी प्राप्त होता है। सामान्यतः मालव्य योग वाले जातक का झुकाव शुक ग्रह के फलों की ओर होता है।

शश योग

यह शनि से बनने वाला योग है। यदि शनि लग्न से केन्द्र में स्वराशि मकर या कुंभ अथवा उच्च राशि में हो या मूल त्रिकोण राशि में हो तो शश योग का निर्माण होता है। इस योग के फल इस प्रकार हैः-

फल :- इस योग में पैदा होने वाला जातक अत्यधिक धनवान तथा गाँव पर नजर रखता आदि का मुखिया होता है। वह कारखानों आदि का मालिक होता है। जातक के अधीनस्थ अनेक नौकर आदि कार्यरत होते हैं। जातक दूसरों के धन है और अत्यंत दुष्ट स्वभाव का होता है। कारण जब शनि पाप ग्रहों के प्रभाव में होता है, तो ऐसे दुष्प्रभाव दिखाता है। जातक सुखी एवं प्रसिद्ध भी होता है। शश योग में उत्पन्न जातक का चरित्र संदेहास्पद होता है होता है। सुप्रसिद्ध ज्योतिष गुरु डॉ. बी. वी. रमन का कहना है कि शश योग की व्याख्या करते समय ज्योतिचार्यों को चन्द्रमा की स्थिति पर भी विचार कर लेना चाहिए। यदि यह प्रकाशीय ग्रह बुरे प्रभावों से मुक्त है तो शश योग वाला जातक दूसरों का धन नहीं लेगा और न ही वह कदाचारी ही होगा। यहां पर यह भी उल्लेखनीय है कि जहां पर बुरे प्रभाव नहीं होंगे वहां पर शश योग के कारण बुरे प्रभाव सीमित होते हैं। चन्द्र से केन्द्र में उक्त ग्रह रहने पर भी इन योगों के फल प्राप्त होते हैं, लेकिन योग द्वितीय श्रेणी का रहेगा। अतः फल भी उसी के अनुसार ही मिलेगा।

अतः इस प्रकार पंचमहापुरुष नामक योग के अंतर्गत बनने वाले सभी प्रमुख पाँचों योगों का सम्पूर्ण वर्णन अर्थात् यह कुण्डली में कैसे निर्मित होते हैं तथा इनमें उत्पन्न जातकों को यह किस प्रकार के फल प्रदान करते हैं, इन सबका समावेश मैंने अपने इस लेख के माध्यम से समुचित रूप से कर दिया है। वास्तव में महापुरुष का तात्पर्य अच्छे तन व मन वाले तथा उत्तम भाग्य वाले पुरुषों से है। आशा है कि ज्योतिष के अनेक नवोदित विद्यार्थी इससे अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

मीन लग्न की विशेषताएं एवं सूर्यादि ग्रहों का प्रभाव



डॉ. पुष्पासिंह चौहान

(मीन लग्न की विशेषताएं, स्वभाव एवं प्रकृति के साथ साथ लेखक ने मीन लग्न वालों को सूर्य आदि ग्रहों का प्रभाव कैसा रहेगा मीन लग्न के जातकों को कौन से ग्रहों का शुभ अथवा अशुभ फल प्राप्त होगा। इसके बारे में अनुभवजन्य बाते बताई है जो पाठकों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। जोकि निम्नानुसार विस्तार से जानकारी दी जा रही है- सम्पादक)

मीन लग्न- यह राशि सौम्य, स्त्री, बाम्हण, जल तत्व की राशि है। यह गुरु की राशि है जो कि सौम्य, उदार, मृदु, न्यायप्रिय है। यदि लग्न और लग्नेश पर शुभग्रह प्रभाव है तो जातक उक्त गुणों से अलंकृत होगा। इसमें जन्में व्यक्ति कल्पनाशील होते हैं व इन कल्पनाओं को क्रियाशील करने की कोशिश करते हैं। ये प्रायः रुढ़िवादी नहीं होते और न ही कट्टरपंथी होते हैं। इनकी अनेक व्यक्तियों से मित्रता होती है। द्विस्वभाव होने के कारण इनके विचारों में दृढता नहीं रहती। ये जातक गौर वर्ण के, मध्यम देह दृष्टि के व स्पष्ट वक्ता होते हैं। इनके आचरण में करुणा, परहित की भावनाएँ रहती है। ललित कलाओं में रुचि रखते हैं। इनका भाग्योदय 16,28,36 वें वर्ष में होता है। चन्द्र व मंगल मित्र ग्रह हैं। शुक्र शनि मारक होते हैं। इसमें उत्पन्न जातक अधिकांशतः परामर्शदाता, मंत्री, ज्योतिषी, संगीतज्ञय, शिक्षक होते हैं। इनको उदर व्याधि की संभावना रहती है। पुखराज, मोती, मूंगा शुभ रत्न हैं व सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शुभ दिन हैं तथा लाल पीला, सफेद इनके शुभ रंग हैं । इस लग्न में विभिन्न ग्रहों के फल निम्नानुसार होते है-

सूर्यः षष्ठेश होकर अशुभ है। केन्द्र या



त्रिकोण में बलहीन सूर्य अधिक उचित है। यह भाव 8 या 12 में होने से विपरीत राजयोग बनाता है।

चंद्रः- पंचमेश के रुप में भाव 8 व 12 को छोड़कर शेष भाव में शुभ फल देता है जिससे यश, धन, विद्या, संतान की वृद्धि होती है।

मंगलः- इस मीन लग्न में मंगल द्वितीयेश और नवमेश के रुप में शुभ तथा चंद्र या गुरु के साथ राजयोग बनाता है क्योंकि चंद्र-गुरु का मित्र है जो शुभ स्थानों का स्वामी है।

बुधः- भाव 4 च 7 का स्वामी होकर केन्द्र दोष वाला है। अपनी दशा में प्रायः शुभ फल नहीं दे पाता। षष्ठेश सूर्य के साथ यह शुभ फल देता है चुकि दोनों की युति से दोष में कमी आ जाती है।

गुरुः- लग्न व भाव 10 का स्वामी होकर केन्द्र दोष से पीड़ित है फिर भी केवल यह दोष धनु लग्न में ही होता है। बुध की भांति यह भी अपनी दशा में प्रायः फल देने में असफल होता है परन्तु लग्न, पंचम, दशम, सप्तम भावों में होने से शुभ फल देता है।

शुक्रः- भाव 3 और 6 का स्वामी होकर योगकारक नहीं होता । निर्बल शुक्र धन हेतु शुभ है मगर आयु हेतु अशुभ होता है। भाव 1,3,6,8,10,11 में शुभ और अन्य में अशुभ फल देखे गये हैं।

शनिः- भाव 11 व 12 का स्वामी होकर अशुभ माना गया है। यह जिस भाव में बैठेगा उसकी हानि करेगा फिर भी भाव 3,,6,,8,10,11 में उत्तम फल देता है। **जन्म नक्षत्र विचार**

1. जन्म नक्षत्र में चंद्रमा समस्त कार्यों में शुभ होता है। परन्तु दवाई सेवन, बाद में अशुभ माना गया है।

2. जन्म के चन्द्रमा में यात्रा, युद्ध, ग्रह आरंभ, विवाह एवं क्षौर कर्म ये पांच कर्म नहीं करना चाहिए।

3. जन्म के मास, नक्षत्र व वार में पुत्र का मंगल कार्य नहीं करना चाहिए ।

4. जन्म के मास, नक्षत्र, लग्न राशि में विवाह होने पर स्त्री अधिक प्रतिष्ठा पाने वाली होती है।

5. जन्म के नक्षत्र, मास, तारा और लग्न में विवाहित कन्या पुत्रों से युत और पति की प्यारी होती है।

6. जन्म नक्षत्र में यात्रा करने पर मार्ग में बंधन, खेती के काम में हानि, औषधि सेवन से मरण, गृह आरंभ में अग्नि भय, क्षौर में रोग, श्राद्ध में धन विनाश, वाद-विवाद में बुद्धि नाश और युद्ध में भय देने वाला होता है।

बुध-गुरु युति



अरविंद पांडेय
सहायक सम्पादक जीवन वैभव

ज्योतिष शास्त्र अन्तर्गत जन्म कुंडली में बुध जो कि बुद्धि, संचार का कारक है और गुरु जो की ज्ञान, विस्तारका कारक है की युति को बहुत ही शक्तिशाली और शुभ माना जाता है। जब ये दोनों एक साथ बैठते हैं, तो इसे 'गुरु-बुध योग' कहा जाता है,जो जातक को उच्च कोटि की बुद्धि, स्पष्ट वक्ता और ज्ञानवान बनाता है।

इसके प्रमुख प्रभाव :-

तीक्ष्ण बुद्धि और ज्ञानः यह योग बुद्धि और ज्ञान का सबसे बेहतरीन मिश्रण है? ऐसे जातक बेहतरीन विश्लेषक (Analyst), सलाहकार (Advisor) या लेखक (Writer) होते हैं।

प्रभावशाली वाणीः जातक की बोली बहुत मधुर, स्पष्ट और तार्किक होती है?वे अपनी बातों से लोगों को आसानी से प्रभावित कर लेते हैं? करियर में सफलताः यह युति शिक्षण, कानून, ज्योतिष, संपादन (Editing), और बैंकिंग क्षेत्रों में अपार सफलता दिलाती है?

धन और भाग्यः गुरु ज्ञान और बुध व्यापार का कारक है,इसलिए दोनों का मिलन जातक को व्यवसाय या लेखन जैसे कार्यों से अच्छा धन और प्रसिद्धि दिलाता।

बुध-गुरु युति वैदिक ज्योतिष की शुभ युतियों में गिनी जाती है क्योंकि यह ज्ञान, बुद्धि, नैतिकता और व्यावहारिक कौशल का सुंदर समन्वय करती है। यह व्यक्ति को शिक्षा, व्यापार, प्रशासन, लेखन, अध्यापन और नेतृत्व के क्षेत्रों में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। पंचम, नवम, दशम और एकादश भावों में यह युति विशेष रूप से फलदायी मानी जाती है, जबकि षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावों में इसके परिणाम मिश्रित हो सकते हैं और अन्य ग्रहों के प्रभाव के अनुसार बदलते हैं। जानते है सभी भावो में बुध गुरु युति क्या प्रभाव दिखती है। प्रारम्भ करते है प्रथम भाव से



प्रथम भाव : लग्न भाव व्यक्ति के शरीर, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य और जीवन-दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। इस भाव में बुध और गुरु की युति व्यक्ति को अत्यंत बुद्धिमान, शिक्षित, विनम्र और प्रभावशाली बनाती है। ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मान प्राप्त करता है और उसकी वाणी में आकर्षण होता है। वह दूसरों को उचित सलाह देने की क्षमता रखता है तथा शिक्षा, प्रशासन, कानून, बैंकिंग, अध्यापन और परामर्श जैसे क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकता है।

द्वितीय भाव : द्वितीय भाव धन, परिवार, वाणी और संस्कारों का भाव है। इस भाव में बुध-गुरु युति व्यक्ति को मधुरभाषी, विद्वान और आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है। उसकी वाणी में ऐसा प्रभाव होता है कि लोग उसकी बातों से प्रभावित हो जाते हैं। परिवार में सम्मान मिलता है तथा धन संचय की क्षमता भी अच्छी रहती है। ऐसे जातक व्यापार, वित्त, बैंकिंग, लेखन, अध्यापन और वक्तृत्व कला में विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यदि युति शुभ हो तो व्यक्ति अपने ज्ञान के माध्यम से धन अर्जित करता है।

तृतीय भाव : तृतीय भाव साहस, पराक्रम, संचार, लेखन, मीडिया और छोटे भाई-बहनों का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ बुध-गुरु युति व्यक्ति को उत्कृष्ट लेखक, पत्रकार, वक्ता या संचार विशेषज्ञ बना सकती है। व्यक्ति में नई बातें सीखने की तीव्र इच्छा रहती है और वह अपने विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। भाई-बहनों से सामान्यतः अच्छे संबंध रहते हैं और व्यक्ति अपने प्रयासों से सफलता प्राप्त करता है। व्यापार तथा मीडिया से जुड़े क्षेत्रों में यह युति विशेष लाभ देती है।

चतुर्थ भाव : चतुर्थ भाव माता, घर, वाहन, संपत्ति, शिक्षा और मानसिक शांति का भाव है। इस भाव में बुध-गुरु युति व्यक्ति को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करती है। माता का सहयोग मिलता है तथा घर-परिवार का वातावरण सुखद रहता है। जीवन में घर, भूमि और वाहन प्राप्त होने की अच्छी संभावना रहती है। व्यक्ति का मन धार्मिक और संतुलित होता है तथा वह परिवार और समाज दोनों में सम्मान प्राप्त करता है।

पंचम भाव : पंचम भाव बुद्धि, शिक्षा, संतान, रचनात्मकता और पूर्व जन्म के पुण्यों का भाव है। यह बुध-गुरु युति के लिए सबसे श्रेष्ठ स्थानों में से एक माना जाता है। व्यक्ति अत्यंत प्रतिभाशाली, विद्वान और शोधप्रिय होता है। उसकी स्मरण शक्ति उत्कृष्ट होती है तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता की संभावना बढ़ जाती है। संतान भी योग्य और बुद्धिमान होती है। यदि अन्य ग्रह सहयोग करें तो व्यक्ति शिक्षा, अनुसंधान, साहित्य, विज्ञान और निवेश के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकता है।

षष्ठ भाव : षष्ठ भाव रोग, ऋण, शत्रु, प्रतियोगिता और सेवा का भाव है। इस भाव में बुध-गुरु युति व्यक्ति को अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने की क्षमता देती है। वह समस्याओं का समाधान बुद्धिमानी से निकालता है और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखता है। ऐसे जातक प्रशासन, न्यायपालिका, चिकित्सा, लेखा, बैंकिंग तथा सरकारी सेवाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यदि ग्रह पीड़ित हों तो स्वास्थ्य संबंधी छोटी-मोटी समस्याएँ तथा मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकते हैं।

सप्तम भाव : सप्तम भाव विवाह, जीवनसाथी, साझेदारी और सार्वजनिक जीवन का भाव है। इस स्थान पर बुध-गुरु युति जीवनसाथी को शिक्षित, समझदार और सहयोगी बनाती है। विवाह के बाद भाग्य में वृद्धि हो सकती है। व्यापारिक साझेदारी भी लाभदायक रहती है। व्यक्ति अपने व्यवहार और बुद्धिमत्ता के कारण लोगों का विश्वास जीतता है। यदि ग्रह अशुभ प्रभाव में हों तो वैचारिक मतभेद या अहंकार के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

अष्टम भाव : अष्टम भाव रहस्य, अनुसंधान, आयु, परिवर्तन और गूढ़ विद्याओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस भाव में बुध-गुरु युति व्यक्ति को ज्योतिष, मनोविज्ञान, दर्शन, शोध और आध्यात्मिक विषयों की ओर आकर्षित करती है। वह जीवन के रहस्यों को समझने की गहरी इच्छा रखता है। अचानक धन लाभ, विरासत या बीमा से लाभ के योग बन सकते हैं। यदि युति अशुभ हो तो मानसिक तनाव, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ अथवा जीवन में बार-बार परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं।

नवम भाव : नवम भाव भाग्य, धर्म, गुरु, उच्च शिक्षा, पिता और लंबी यात्राओं का भाव है। यहाँ बुध-गुरु युति अत्यंत शुभ मानी जाती है। व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक, विद्वान और उच्च नैतिक मूल्यों वाला होता है। उसे योग्य गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त होता है तथा उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट सफलता मिलती है। विदेश यात्रा, शोध, अध्यापन, दर्शन और धार्मिक कार्यों में विशेष प्रगति होती है। समाज में व्यक्ति सम्मानित और प्रतिष्ठित बनता है।

दशम भाव : दशम भाव कर्म, व्यवसाय, पद, प्रतिष्ठा और सामाजिक सम्मान का भाव है। इस भाव में बुध-गुरु युति व्यक्ति को उत्कृष्ट करियर प्रदान करती है। वह प्रशासन, शिक्षा, कानून, बैंकिंग, प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, लेखा, परामर्श तथा व्यवसाय में उच्च पद प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति अपनी बुद्धिमत्ता, नैतिकता और नेतृत्व क्षमता के कारण समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करता है। यह युति आर्थिक उन्नति और स्थायी सफलता का भी संकेत देती है।

एकादश भाव : एकादश भाव आय, लाभ, इच्छाओं की पूर्ति और मित्रों का भाव है। यहाँ बुध-गुरु युति व्यक्ति को अनेक स्रोतों से आय प्राप्त करने की क्षमता देती है। प्रभावशाली मित्रों और सामाजिक नेटवर्क से लाभ मिलता है। व्यापार और निवेश में अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। व्यक्ति की योजनाएँ सफल होती हैं और जीवन में आर्थिक स्थिरता आती है।

द्वादश भाव : द्वादश भाव व्यय, विदेश, मोक्ष, आध्यात्मिकता और एकांत का भाव है। इस स्थान पर बुध-गुरु युति व्यक्ति को विदेश से लाभ, उच्च शिक्षा, शोध तथा आध्यात्मिक उन्नति प्रदान कर सकती है। व्यक्ति दान-पुण्य और समाज सेवा में रुचि रखता है। हालाँकि खर्च अपेक्षाकृत अधिक हो सकते हैं, परंतु यदि वे शिक्षा, यात्रा या आध्यात्मिक कार्यों में हों तो दीर्घकाल में लाभकारी सिद्ध होते हैं। यह युति व्यक्ति को आत्मचिंतन और आंतरिक विकास की ओर प्रेरित करती है।

हालांकि यह एक बेहद शुभ योग है, लेकिन इसके सटीक परिणाम कुंडली के किस भाव (House) में यह युति बन रही है और अन्य ग्रहों की दृष्टि पर भी निर्भर करते हैं।

ग्रहों के फलित में शुभत्व के लिए लग्न अनुसार रत्न धारण



श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

ज्योतिष शास्त्र में रत्नों से भी उपाय बताये गये हैं। रत्न आकाश से कीमती रश्मि खींच कर मनुष्य के शरीर के अंदर ग्रह के प्रभाव पैदा करते हैं। लेकिन सब रत्न सबके लिए ठीक नहीं।

कुछ विद्वानों के अनुसार जिस ग्रह की दशा- अतर्दशा चल रही हो, उसका रत्न धारण करना चाहिए। कुछ विद्वानों के अनुसार उस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए, जो जातक के लिए शुभ हो। कुछ विद्वानों का मत यह भी है कि जो ग्रह कुंडली में ठीक स्थिति में नहीं हैं, उसका रत्न धारण करना चाहिए।

मेष :- मेष लग्न वालों के लिए मूंगा पहनने से जमीन-जायदाद और तंदुरुस्ती ठीक रहेगी। मोती पहनने से सुख-शांति रहेगी। माणिक पहनने से संतान, पूजा-पाठ और विद्या की प्राप्ति होती है। पुखराज पहिनने से पति के सुख में वृद्धि, और भाग्योदय में सहायक होता है। इस लग्न वालों के लिए हीरा, पन्ना और गोमेद ठीक नहीं है।

वृष :- इस लग्न वालों के लिए हीरा, सफेद पुखराज, सफेद मूंगा, जरकन पहनने से सुख-सुविधाएं, धन, जायदाद और सेहत ठीक रहती है। पन्ना पहनने से विद्या और संतान ठीक रहती है। नीलम सुख-सुविधा के साधन और भाग्यवृद्धि के लिए सहायक होता है। इस लग्न वालों के लिए मूंगा, माणिक एवं पीला पुखराज जैसे रत्न लाभदायक नहीं होते।

मिथुनः इस लग्न वालों के लिए पन्ना रत्न जातक को स्वास्थ्य और यश दिलाने में महत्वपूर्ण है। संतान एवं विद्या प्राप्ति हेतु हीरा अत्याधिक कारगर है। धारा रत्न जातक को दाम्पत्य एवं व्यवसाय हेतु कारगर होता है। स

कर्कः इस लग्न के लिए स्वास्थ्य हेतु मोती फलदायी है। माणिक्य धन और की वृद्धि करता है। मूंगा रत्न जमीन-जायदाद, व्यवसाय, संतान तथा विद्या हेतु विशेष वद्धि कारक है। पुखराज भाग्य वृद्धि में सहायक होता है। इस लग्न वालों के लिए हीरा, पन्ना, नीलम एवं गोमेद रत्न कदापि ठीक नहीं है। सिंहः इस लग्न के जातकों हेत माणिक स्वास्थ्य वृद्धि के लिए विशेष फलदायी है। पुखराज संतान एवं विद्या प्राप्ति में सहायक होता है। तथा पारिवारिक सुख एवं भाग्योदय के लिए मूंगा सर्वोत्तम माना गया है। इस लग्न वालों को हीरा , नीलम, गोमेद अच्छे फल दायी नहीं हैं।

कन्या :- इस लग्न वालों के लिए पन्ना सेहत और मान इज्जत के लिए ठीक रहेगा हीरा धन और भाग्योदय देगा पुखराज दाम्पत्य पारिवारिक सुख और अचल संपत्ति प्रदान करने में सहायक होगा। नीलम मध्यम फलदायी है। मूंगा और माणिक शुभ फलदायी नहीं है।

तुला :- इस लग्न वालों के लिए हीरा सेहत के लिए सहायक होगा। पन्ना भाग्य वृद्धि करता है। नीलम हर प्रकार के सुख, विद्या एवं संतान प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। मूंगा, माणिक और पुखराज इस लग्न के जातकों को अच्छे फल नहीं देते ।

वृश्चिक :- इस लग्न के जातकों के स्वास्थ्य हेतु मूंगा उत्तम रत्न है। पुखराज धन संचय एवं विद्या हेतु सर्वोत्तम फलदायी है। पन्ना, नीलम एवं हीरा इस लग्न के जातकों को अच्छे फल नहीं देते।

धनु :- इस लग्न वालों के लिए पुखराज सेहत एवं पारिवारिक सुख देता है। पन्ना दाम्पत्य एवं व्यवसाय हेतु शुभ फलदायी है। संतान के लिए मूंगा उत्तम है तथा भाग्य की रुकावटें दूर करने में माणिक सहायक होता है। इस लग्न वालों के लिए मोती, नीलम एवं गोमेद जैसे रत्न ठीक नहीं है।

मकर :- मकर लग्न वालों के लिए नीलम स्वास्थ्य और धन देता है। पन्ना भाग्योदय कराता है। हीरा संतान सुख एवं व्यवसाय वृद्धि में कारगर होता है। इस लग्न वालों के लिए मूंगा और माणिक उत्तम फलदायी नहीं है।

कुंभ :- इस लग्न वालों के लिए नीलम सेहत के लिए ठीक रहेगा। पुखराज विद्या और धन, जायदाद के लिए ठीक है। गोमेद ठीक रहेगा। पन्ना भाग्योदय के लिए ठीक है। हीरा विद्या, मान-इज्जत और पैसे के लिए ठीक है। मूंगा ठीक नहीं रहेगा ।

मीन :- मीन लग्न वालों के लिए पुखराज सेहत, पैसा और मान-इज्जत के लिए अच्छा रहेगा। पन्ना पति-पत्नि और पैसे के लिए ठीक है। मूंगा विद्या और भाग्योदय के लिए ठीक है। माणिक, गोमेद, हीरा, नीलम ठीक नहीं है।

ज्योतिषशास्त्र में रत्नों का उपयोग उससे संबंधित ग्रह को बलवान बनाने में किया जाता है। मूंगा रत्न मंगल का बल बढ़ाता है। हीरा शुक्र का, मोती चंद्रमा का तथा माणिक सूर्य का बल बढ़ाता है। पन्ना रत्न बुध, पुखराज गुरु एवं नीलम रत्न शनि ग्रह का बल बढाने में सहायक है। उपरोक्त रत्नों को धारण करना तभी उत्तम रहता है।

गोचर वेध स्थान



डॉ श्री केतन कि खरे (गुरुजी)
PhD ज्योतिष शास्त्री, MA वेदांग ज्योतिष, कल्याण (महाराष्ट्र)

वेध का अर्थ है जब कोई ग्रह गोचर में शुभ या अशुभ फल देने की स्थिति में हो, तब किसी अन्य निश्चित स्थान पर स्थित ग्रह उसके फल में बाधा उत्पन्न करे। इस सिद्धांत को गोचर वेध कहा जाता है। यह विशेष रूप से ताजिक ज्योतिष, मुहूर्त चिंतामणि, फलदीपिका तथा दक्षिण भारतीय गोचर पद्धति में अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है।

वेध क्या है?

उदाहरण के लिए, यदि गुरु जन्म चंद्रराशि से द्वितीय भाव में गोचर कर रहा हो, तो सामान्यतः धनवृद्धि, पारिवारिक सुख तथा वाणी में मधुरता जैसे शुभ फल प्राप्त होते हैं। किंतु उसी समय यदि चंद्रराशि से पंचम भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो वह गुरु के शुभ फल में वेध (बाधा) उत्पन्न करता है। परिणामस्वरूप अपेक्षित लाभ में कमी, विलंब अथवा आंशिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

वेध का नियम

1. यदि ग्रह शुभ गोचर में हो, लेकिन उसके संबंधित वेध स्थान में कोई ग्रह स्थित हो, तो शुभ फल में बाधा आती है या फल मिलने में विलंब होता है।

2. यदि वेध स्थान रिक्त हो, तो ग्रह के शुभ फल पूर्ण रूप से प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाती है।



3. यदि वेध देने वाला ग्रह पापग्रह हो, तो शुभ फल अधिक प्रभावित होते हैं। यदि शुभग्रह वेध दे रहा हो, तो बाथा अपेक्षाकृत कम होती है और परिणाम कुछ हद तक अनुकूल बने रह सकते हैं।

विपरीत वेध

यदि कोई ग्रह अशुभ गोचर में हो और उसके विपरीत वेध स्थान में कोई ग्रह स्थित हो, तो अशुभ परिणामों में कमी आ सकती है। इस स्थिति को विपरीत वेध कहा जाता है। ऐसे समय अनेक बार प्रतिकूल परिस्थितियाँ अपेक्षा से कम हानि पहुँचाती हैं और कुछ मामलों में लाभकारी परिणाम भी प्राप्त हो सकते हैं।

वेध का विचार करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. गोचर का विचार सदैव जन्म चंद्रराशि से करना चाहिए।

2. सबसे पहले यह देखना चाहिए कि ग्रह शुभ गोचर में है या अशुभ गोचर में।

3. उसके बाद संबंधित वेध स्थान में किसी ग्रह की उपस्थिति का परीक्षण करना चाहिए।

4. यदि महादशा-अंतरदशा अनुकूल हो, तो वेध का प्रभाव काफी हद तक कम हो सकता है।

5. अंतिम फलादेश करते समय जन्मकुंडली, गोचर, दशा तथा वेध इन सभी का संयुक्त रूप से विचार करना चाहिए।

उदाहरण- मान लीजिए किसी जातक की चंद्रराशि से गुरु द्वितीय भाव में गोचर कर रहा है। यह धन, परिवार, वाणी तथा आर्थिक उन्नति के लिए शुभ माना जाता है। किंतु उसी समय यदि चंद्रराशि से द्वादश भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो वह गुरु के द्वितीय भाव के शुभ फल में वेध उत्पन्न करेगा। परिणामस्वरूप अपेक्षित आर्थिक लाभ में विलंब हो सकता है, व्यय बढ़ सकते हैं अथवा लाभ पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाता।

इस प्रकार गोचर वेध सिद्धांत का उपयोग गोचर फलादेश को अधिक सूक्ष्म, गहन एवं यथार्थ बनाने के लिए किया जाता है।

ग्रहों के शुभ गोचर एवं उनके वेध स्थान

ग्रह	शुभ गोचर स्थान (चंद्रराशि से)	वेध स्थान
सूर्य	3, 6, 10, 11	9, 12, 4, 5
चंद्र	1, 3, 6, 7, 10, 11	5, 9, 12, 2, 4, 8
मंगल	7 3, 6,11	12, 9, 5
बुध	2, 4, 6, 8, 10, 11	5, 3, 9, 1, 7, 12
गुरु	12, 5, 7, 9, 11	7 12, 4, 3, 10, 8
शुक्र	11, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12	6, 10, 9, 8, 7, 5, 3, 1, 2
शनि	7 3, 6, 11	12, 9,5

पर्यावरण और सामाजिक स्वास्थ्य

केवल प्राणियों के लिये ही नहीं संपूर्ण सृष्टि के लिये महत्वपूर्ण



- रमेश शर्मा

पर्यावरण और सामाजिक स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक हैं। इनके संतुलन में ही संपूर्ण सृष्टि का अस्तित्व हैं। पर्यावरण के संरक्षण में ही सामाजिक स्वास्थ्य और प्रकृति का दीर्घजीवन निहित है। इसीलिए भारतीय वाड्मय में ऋग्वेद से लेकर रामचरित मानस तक प्रकृति की महत्ता और स्वस्थ्य सामाजिक वातावरण पर जोर दिया गया है।

पर्यावरण अर्थात प्रकृति का आवरण। यह ऐसा आवरण है जो धरती के प्राणियों और प्रकृति के जीवन को सुरक्षित रखता है और उनके स्वरूप को निखारने का कारक भी है। लेकिन 'प्रकृति का यह आवरण' मैला होने लगा है। आवरण को गंदा करने वाला कोई और नहीं मनुष्य स्वयं है। विकास, प्रगति, दिखावा और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति से ही यह आवरण मैला हुआ है। मनुष्य द्वारा फैलाई जा रही गंदगी विषाक्त रसायन प्रतिदिन पर्यावरण का प्रदूषण बढ़ा रहे हैं। इससे पूरे समाज और संसार का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। आकाश में विषाक्त रसायन जाने से हवा का प्रदूषण प्रतिदिन बढ़ रहा है। जिससे श्वाँस लेना कठिन हो रहा है। किसी को कल्पना तक नहीं कि श्वाँस के माध्यम से देह के भीतर जा रहे विषाक्त रसायन कितने रोगों का बीज बो रहे हैं। धरती पर जो गंदगी फैलाई जा रही है उससे फल फूल सब्जी और अन्न सब प्रभावित हो रहे हैं। विषाक्त फल सब्जी और अन्न से बना भोजन करने वाले और विषाक्त पुष्प की सुगन्ध लेने वाले कितने दिन स्वस्थ और सुरक्षित रह सकेगें यह किसी से छिपा नहीं है। पर्यावरण का असंतुलन से होने वाली क्षति सीधे दिखाई नहीं देती। उसके प्रभाव धीरे धीरे समझ आते हैं। आज पूरा विश्व इन दुप्रभावों को झेल रहा है। इससे उत्पन्न प्रकृति के अस्तित्व का संकट भी स्पष्ट दिखाई देने लगा और सामाजिक स्वास्थ्य का ह्रास भी सामने आ गया है। पर्यावरण संतुलन बिगड़ने से शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोग बढ़ रहे हैं।शारीरिक रोग तो दिखाई दे जाते हैं। उनके उपचार का प्रबंध भी हो जाता है लेकिन मानसिक रोग दिखाई भी नहीं देते। अस्सी प्रतिशत लोगों को यह पता ही नहीं होता कि उन्हें मानसिक रोगों ने जकड़ लिया है। बढ़ते व्यसन, अपराध, नकारात्मक सोच, चिड़चिड़ापन और हिंसक स्वभाव मानसिक रोगों की निशानी है। शारीरिक रोग से तो व्यक्ति और परिवार ही पीड़ित होता है लेकिन मानसिक रोगी पूरे समाज को त्रस्त कर देता है। यह समस्या केवल भारत की नहीं, पूरा विश्व जूझ रहा है। इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2024 तक के जारी किये गये आँकड़ों से समझा जा सकता है। वर्ष 2024 में प्रदूषण कारी कार्बन उत्सर्जन की मात्रा 37.4 बिलियन मीट्रिक टन आँकी गई। जबकि वर्ष 2015 में यह आँकड़ा 34.1 बिलियन मीट्रिक टन था। अर्थात इन दस वर्षों में लगभग दस प्रतिशत प्रदूषण बढ़ा। दस वर्षों की इस अवधि में भारत के आँकड़े भी इससे बहुत अलग नहीं हैं। भारत में वर्ष 2024 में यह प्रदूषणकारी कार्बन का उत्सर्जन 3.12 अरब मीट्रिक टन हुआ जबकि वर्ष 2015 में 2.33 अरब मीट्रिक टन था। वैश्विक और भारतीय स्तर पर प्रदूषण का यह बढ़ता दायरा गंभीर स्थिति में पहुँच गया है। पूरे संसार की लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या इसके दायरे में आ गई है। चिकित्सालयों में बढ़ती भीड़ और मृत्यु के आँकड़े इसका प्रमाण हैं।



मुख्य कारण तकनीक विकास और आधुनिकीकरण की एक तरफा दौड़ से समाज की बदलती जीवन शैली है। विकास केलिये खुली भूमि का निरन्तर कम हो रही है, आसमान छूती सीमेन्ट की

अट्टालिकाएँ धूप को रोशनी को रोक रहीं हैं, सड़कों का चौड़ीकरण धरती को ढंक रहा है। दौड़ती कारों और आधुनिक फैक्ट्रियों से निकलता विषाक्त धुँआ, उड़ती हुई धूल, कचरा जलाना, फसलों में उपयोग किया जाने वाला रासायनिक खाद और घरों से निकलने वाला कचरा सब पर्यावरण संतुलन को आघात कर रहे हैं। श्वाँस, भोजन और जल जैसी जीवन की आधरभूत आवश्यकताएँ अब प्रदूषण युक्त हो गई हैं। इसी कारण रक्तचाप, डायबिटीज, टाइफाइड, हैजा, पीलिया आदि ही नहीं अब तो फेफड़े, लीवर और हृदयरोग जैसी बीमारियाँ भी बढ़ने लगीं हैं। इन सबका कारण धरती, जल एवं वायु का प्रदूषण है। चिकित्सा विशेषज्ञों का अनुमान है कि भारत में केवल जल प्रदूषण से सालभर में लगभग चार करोड़ लोग बीमार होते हैं जिनमें चार लाख लोग मौत के मुँह में समा जाते हैं। जबकि सभी प्रकार के प्रदूषण से भारत में होने वाली मौतों का आँकड़ा प्रतिवर्ष लगभग सत्रह लाख है। अस्सी प्रतिशत बीमारियों का कारण यह पर्यावरण का असंतुलन ही है।

सामाजिक स्वास्थ्य पर पर्यावरण का प्रभाव

सबसे पहले हमें सामाजिक स्वास्थ्य को समझना। जिस प्रकार किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य शारीरिक और मानसिक दो प्रकार से प्रभावात होता है। उसी प्रकार सामाजिक स्वास्थ्य भी दो प्रकार बिगड़ता है। सड़क पर चलते हुये व्यक्ति द्वारा अपने भीतर पनपते किसी रोग के वायरस छोड़ने से शारिरिक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं वहीं उसके सोच और जीवन शैली से सामाजिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता। परिवार और कुटुम्ब के समन्वय से संपूर्ण समाज में एक समरस और समन्वित शैली विकसित होती है। इसे तोड़ने का काम व्यक्ति ही करता है। किसी वयक्ति का एकाकी रहना, चिड़चिड़ा स्वभाव समाज की सामूहिक शैली को प्रभावित करता है। एकाकी, चिड़चिड़ा और आत्मकेंद्रित स्वभाव का व्यक्ति दूसरे का सम्मान कम करता है। उसके दृष्टिकोण को आदर नहीं देता इससे समाज का सामूहिक स्वरूप प्रभावित होता है। मनुष्य यदि सामाजिक प्राणी है तो उसे समाज के बीच ही रहना होगा। यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह सामाजिक स्वास्थ्य को आघात करता है। मान लीजिए कोई विवाह समारोह चल रहा है। विवाह समारोह में सब हँसते खिलखिलाते हैं। सब लोग सकारात्मक आनंद ले रहे हैं। लेकिन इसी बीच कुछ लोग अपना मोबाइल निकालकर कुछ खेलने लगे तो इसका दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है। एक तो ऐसा व्यक्ति समाज के सामूहिक स्वरूप और उत्सव को प्रभावित कर रहा होता है और दूसरे इसकी अन्य लोगों की विचारशैली पर भी नकारात्मक प्रतिक्रिया होती है। ये दोनों लक्षण सामाजिक स्वास्थ्य के विपरीत माने जाते हैं। व्यक्ति के स्वभाव, कार्यशैली, पसंद और प्राथमिकता में पर्यावरण की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसे हम बदलते मौसम में बदलती इच्छाओं से ही समझ सकते हैं। बादल घिरने पर कुछ और खाने का मन होता है और ग्रीष्म के मौसम में शीतल पेय पर ध्यान जाता है। कयी बार अचानक कुछ खाने की, कुछ न खाने की इच्छा भी वातावरण पर निर्भर करती है। यदि पर्यावरण से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है तो इससे विचार भी प्रभावित होते हैं। सामाजिक स्वास्थ्य की नींव में व्यक्ति के विचार और मानसिकता होती है। इसलिए पर्यावरण को प्राणी के शारीरिक और मानसिक रोगों के साथ सामाजिक स्वास्थ्य का आधार भी माना गया है। समाज को स्वस्थ और प्रगतिशील होने केलिये व्यक्तियों का प्रसन्नचित्त और सकारात्मक होना आवश्यक है। एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति सदैव सक्रिय रहता है। व्यक्ति की सकारात्मक गतिशीलता और सक्रियता से उत्पादकता बढ़ती है, सभी संबंध और मधुर रहते हैं। यह बाते समाज की प्रगति, प्रसन्नता और स्वास्थ्य का आधार होती हैं। सामाजिक स्वास्थ्य के लिये समाज के स्वरूप में समानता, दूसरे के दृष्टिकोण को समझना, बंधुत्व भाव, नैतिकता, प्रगतिशीलता, सह-अस्तित्व का वातावरण, सहयोग और सामूहिकता तथा प्राकृतिक आयामों के संरक्षण का भाव होना आवश्यक है जो भारतीय वाड्मय में सनातन काल से रहा है।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि यदि व्यक्ति गतिशील होगा, सक्रिय होगा तो वह प्रगति करेगा तब आधुनिक प्रगति को पर्यावरण और सामाजिक स्वास्थ्य के लिये विपरीत कैसे माना जा सकता। यह सही है कि आधुनिक तकनीक के अविष्कार की स्पर्धा से अलग नहीं रहा जा सकता। वह समाज और व्यक्ति सदैव पिछड़ जाते हैं जो आधुनिक तकनीकि को नहीं अपनाते। लेकिन इसमें संतुलन और यथार्थता आवश्यक होती है। जिस प्रकार अंधकार और प्रकाश साथ साथ चलते हैं। हम अंधकार का उपयोग निद्रा केलिये करते हैं और प्रकाश का उपयोग पुरुषार्थ और पराक्रम केलिये। यदि हम निद्रा न ले तो पुरुषार्थ कैसे कर पायेंगे। यनि हमने अंधकार के समय का भी सकारात्मक उपयोग सीखा। ऊर्जा अर्जित करने का माध्यम बनाया। हम अंधकार को रोक नहीं सकते लेकिन उसका उपयोग करना सीखे। ठीक इसी प्रकार आधुनिक प्रगति में उपलब्धि के साथ उतने ही नकारात्मक अवयव भी

दिखाई देगे हमें उनका उपयोग कैसे करना। यदि घर से कचरा निकलता है। यदि हमने उसे बाहर फेक दिया तो प्राणी, पर्यावरण और समाज तीनों का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। इसीलिए कचरे का सकारात्मक और सृजनात्मक उपयोग पर विचार करके कदम बढ़ाना होगा।

भारतीय वाड्मय में पर्यावरण संरक्षण

यह संपूर्ण सृष्टि और प्रकृति अग्नि, जल, वायु, धरती और आकाश इन पांच तत्वों से संचालित होती है। दीर्घजीवन और स्वास्थ्य इन पांचों तत्वों की शुद्धता पर निर्भर है। पेड़, पर्वत, पौधे, नदियाँ सहित समस्त प्राणियों का शरीर और जीवन का आधार यही पाँच तत्व हैं। इन पांच तत्वों की शुद्धता और संतुलन में ही सृष्टि का अस्तित्व है। कल्पना कीजिये कि यदि धरती का तापमान बढ़ जाय या बहुत नीचे गिर जाय तो क्या जीवन सुरक्षित रह सकेगा? इसी प्रकार वायु में गंदगी और विषैले तत्व घुल जाने वायु भी विषाक्त हो जाती है। विषाक्त वायु में श्वाँस लेने से भी जीवन सुरक्षित नहीं रहेगा। यदि जीवन बच भी गया तो वह बीमारियों से भर जायेगा। यही स्थिति विषाक्त धरती,अग्नि, और आकाश की है। रोग ग्रस्त प्राणी संपूर्ण समाज को भी रोगग्रस्त बनाते हैं। इसीलिए भारतीय वाड्मय में प्रगति के साथ जीवन के संतुलन और पर्यावरण की शुद्धता पर बहुत जोर दिया गया है। वेदों से लेकर रामचरित मानस तक ऐसा कोई ग्रंथ नहीं जिसमें पर्यावरण के संरक्षण की बात न हो। यदि भारतीय तीज त्यौहारों का स्वरूप, पूजन विधान देखें तो इसके केन्द्र में भी पर्यावरण संरक्षण ही है। वेदों में अग्नि, वरुण(जल), पवन(वायु) की आराधना में सैकड़ों ऋचायें हैं। ऋग्वेद की तो पहली ऋचा पाँच तत्वों के समन्वय की है। चारों वेदों में शायद ही ऐसा कोई मंडल हो जिसमें इनमें से किसी को देव मानकर यज्ञाराधना न हो। इनके पीछे इनके संरक्षित करने का ही संदेश है। स्वस्थ समाज पर भी अनेक वेदों में अनेक ऋचाएं हैं।

'वनस्पति वन आस्थापयध्यम्' अतः वृक्षों को नष्ट करना ही पृथ्वी माता की हिंसा करना है। उसके हृदय पर प्रहार करने जैसा है। वेदों में स्वस्थ्य समाज उसे माना गया जो समस्त जैविक एवं अजैविक परिस्थितियों के बीच पूर्ण सामंजस्य बनाकर चलता है। इसे हम विश्वशाँति मंत्र से ही समझ सकते हैं -

ॐ द्यौः शांतिरंतरिक्षं शांतिः, पृथ्वी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः, सर्व शांतिः, शांतिरेव शांतिः, सा मां शांतिरेधि ।।

अर्थात- आकाश में शांति है; वातावरण में शांति है; पृथ्वी पर शांति; जल शांत है; जड़ी-बूटियाँ शांतिदायक हैं; पौधे शांतिदायक हैं; आकाशीय पिंडों में सामंजस्य है और ज्ञान में पूर्णता है; ब्रह्मांड में सब कुछ शांत है; शांति हर जगह व्याप्त है। वह शांति मुझे भी प्राप्त हो '

इस शाँतिपाठ में पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक स्वास्थ्य सबको बीच संतुलन का स्पष्ट संदेश है। संपूर्ण पृथ्वी और अंतरिक्ष से समन्वय बनाकर चलने का स्थान स्थान पर संदेश है। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में जलतत्त्व पर विचार करते हुए उसकी शुद्धता को स्वस्थ जीवन के लिए अनिवार्य माना और कहा है कि जल-सन्तुलन से ही भूमि में अपेक्षित सरसता रहती है, पृथ्वी पर हरीतिमा छायी रहती है, वातावरण में स्वाभाविक उत्साह उत्पन्न होता है जिससे समस्त प्राणियों का जीवन सुखमय तथा आनन्दमय बनता है। शुक्ल यजुर्वेद में प्रार्थना की गई है कि 'पवन मधुर, सरस व शुद्ध तथा गतिशील रहे, सागर मधुर वर्षण करे, ओज प्रदान करने वाली अन्नादि वस्तुएँ भोजन के बाद मधु के समान सुकोमल बन जाएँ, रात के साथ-साथ दिन भी मधुर रहे, पृथ्वी की धूल से लेकर अन्तरिक्ष तक मधुर हों। न केवल जीवित मनुष्यों का, अपितु पितरों का जीवन भी मधुमय रहे। सूर्य मधुमय रहें, गायें मधुर दूध देने वाली हों। निखिल ब्रह्माण्ड मधुमय रहे। इन ऋचाओं में संपूर्ण सृष्टि, प्रकृति और समाज के सुखी, संपन्न और शांतिमय जीवन का स्पष्ट संदेश है। सामाजिक स्वास्थ्य का एक सुन्दर संदेश यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय के अट्ठारहवें मंत्र में आया है कि 'प्राणियों के प्रति सहृदयता का परिचय देना ही जीवन का सही लक्षण है '

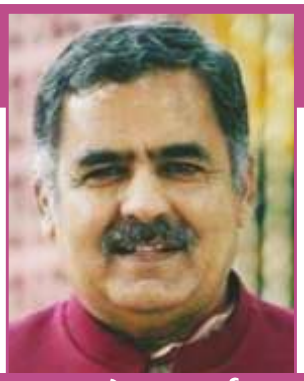
रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों सौ से अधिक चौपाइयां ऐसी हैं जिनमें प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण है। एक चौपाई में कहा गया है-

सुन्दर वन कुसमित अति सोभा,
गुंजत मधुप निकर मधु लोभा।
कंद मूल फल पत्र सुहाए,
ते भए बहुत तग ते प्रभु आए॥

अर्थात वन सुन्दर हैं, फूलों से शोभायमान हैं, कंद मूल फल सब लगे हैं और भ्रमर गुंजायमान कर रहे हैं। यह तभी संभव होगा जब वन संरक्षित होंगे। वहीं महर्षि वाल्मीकि ने भी सावधान किया है कि ''बिना प्रकृति संतुलन के कुछ भी संरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि इस सम्पूर्ण जगत के अस्तित्व का आधार प्रकृति है। पर्यावरण संरक्षण के अभाव में जीवन शून्य है '।

आज यदि संसार में समस्या आ रही है। समाज और सृष्टि का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है तो इसका एक ही कारण है कि भारतीय समाज अपने मूल चिंतन से दूर हो गया है। प्रगति आवश्यक है, तकनीक विकास भी आवश्यक है। संसार से स्पर्धा भी आवश्यक है लेकिन अपने मूल से समन्वय बनाकर की जाने वाली यात्रा ही सार्थक होगी।

दाम्पत्य जीवन का ज्योतिषीय विवेचन



राजेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य भोपाल

जन्मकुंडली व्यक्ति के पूर्व जन्म के कर्मों की अंकसूची है कर्मानुसार इस जन्म में ग्रहीय स्थितियां मिलती हैं

दाम्पत्य जीवन को जन्म कुंडली में सप्तम भाव से देखा जाता है इसके अतिरिक्त यह साझेदारी का भी भाव है इस भाव से विवाह कब होगा,पति पत्नि का स्वरूप क्या होगा,दाम्पत्य जीवन कैसा होगा, एक विवाह होगा या विवाह अगर नहीं हो रहा है तो उसका कारण भी जाना जाता है। सप्तम भाव का स्वामी ग्रह,कारक ग्रह,भाव से संबंध रखने वाले शुभ अशुभ ग्रह ज्योतिषीय कारक हैं।

सप्तम भाव का अधिपति सप्तमेश की स्थिति कुंडली में जितनी मजबूत होगी उतना ही फल शुभ होगा।सप्तमेश सप्तम भाव में बैठे हों अथवा सप्तम भाव को देख रहे हों ,सप्तम भाव में शुभ ग्रह बैठे हों अथवा शुभ ग्रह देख रहे हों तो परिणाम शुभ ही आते हैं फल में वृद्धि होती है इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह बैठे हों अथवा देख रहे हों तो भाव की हानि होती है नाश करते हैं।त्रिकोण अथवा केंद्र भाव में बैठे ग्रह शुभ प्रभाव डालते हैं और यदि मिश्रित ग्रह अर्थात अच्छे बुरे ग्रह होते हैं तो मिश्रित फल मिलता है।सप्तमेश यदि अपनी नीच राशि में बैठा हो या शत्रु के घर में हो तो भाव का नाश करता है और इसके विपरीत यदि अपनी उच्च राशि में त्रिकोण अथवा केंद्र में बैठा हो तो उत्तम फल की प्राप्ति होती है। सप्तमेश यदि 6,8,12 में स्थित हो तो उस भाव का नाश करता है। सप्तम भाव का विचार करते समय भाव स्वामी ग्रह के बल का विचार आवश्यक रूप से करना चाहिए इस हेतु ग्रह की अवस्था उसके अनुसार फल की स्थिति एवं 6 प्रकार के बल अनुसार फल का विवेचन करना चाहिए। यदि जन्म के समय विषम राशि में ग्रह का अंशात्मक मान 0 से 6 अंश है तो ग्रह की बाल्य अवस्था तथा 6 से 12 अंश होने पर किशोर अवस्था,12 से 18 अंश होने पर युवा अवस्था,18 से 24 अंश होने पर वृद्धावस्था,24 से 30 अंश होने पर



मृत अवस्था कही जाती है यदि सम राशि में हो तो इससे बिल्कुल उल्टी गणना की जाती है बाल्य अवस्था में ग्रह 25%, किशोर अवस्था में 50%,युवा अवस्था में 100% फल देते हैं वहीं वृद्धावस्था में कम तथा मृत अवस्था में कोई भी फल नहीं देते हैं। इसके अतिरिक्त 6 प्रकार के बल होते हैं स्थान बल,चेष्टा बल,नैसर्गिक बल, दृष्टा बल, काल बल,जिसके अनुसार ग्रह के बलाबल का परीक्षण कर फल की विवेचना करना चाहिए।ग्रह कुंडली में बल निर्बलता के अनुसार फल देते हैं।

सप्तम भाव का स्थिर कारक ग्रह शुक्र की स्थिति अनुसार फल विवेचन

पत्नि,वस्त्र,आभूषण, वाहन, काम क्रीड़ा,व्यापार संबंधी भोग का विचार शुक्र से किया जाता है।शुक्र यदि स्वयं सप्तम भाव में बैठ जाए तो व्यक्ति अत्यंत कामुक होता है।शुक्र की युति को काम भावना के लिए उत्तरदाई माना गया है। शुक्र की अशुभ स्थिति दाम्पत्य जीवन के लिए अशुभ हानिकारक मानी गई है। सप्तम भाव में यदि शुक्र सबल है तो स्त्री सौभाग्ययुता और धन से सम्पन्न होती है।विवाह के काल,संख्या का निर्णय बिना शुक्र के संभव नहीं होता।

दाम्पत्य जीवन फल विवेचन में गुरू की भूमिका

दाम्पत्य जीवन गृहस्थाश्रम का आधार है इसके विवेचन में गूरू की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। गुरु का सप्तम भाव से संबंध शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। गुरु की युति दृष्ट होने पर दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होता है और व्यक्ति परस्त्री की ओर लालायित नहीं रहता चरित्रवान होता है। विवाह काल,संख्या के निर्धारण में गुरु की भूमिका को देखा जाता है।

त्रिक स्वामियों की भूमिका

भाव के फल निर्धारण में त्रिक भावों के स्वामी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है 6,8,12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं सप्तमेश यदि इन भावों में स्थित हो तो व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होता है। पत्नि रोग से पीड़ित होती है।

पाप ग्रहों का प्रभाव

पाप ग्रहों का संबंध सदैव हानिकारक होता है।यदि पाप ग्रह सातवें बारहवें में हों और पांचवें भाव में छीन चन्द्रमा हो तो जातक भार्या के अधीन होता है।अपने कुटुंब से विरोध लेता है इस प्रकार कलह युक्त होता है। सप्तमेश का पाप ग्रह से संबंध हो तो दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होता है।पाप ग्रहों से दृष्ट होने पर भी फल की हानि होती है।

दशा अन्तर्दशा के आधार पर

दाम्पत्य जीवन एवं विवाह काल निर्धारण में निम्न बिन्दुओं पर विचार किया जाता है

1. शुक्र सप्तमेश की दशा अन्तर्दशा
2. द्वितीयेश की दशा अन्तर्दशा
3. दशमेश की दशा अन्तर्दशा में
4. अष्टमेश की दशा अन्तर्दशा में
5. सप्तमेश से युक्त सप्तम भावस्थ ग्रह की दशा अन्तर्दशा में

ग्रह गोचर के आधार पर विवेचन

गोचर के आधार पर कुछ योग के बिंदु निम्नानुसार हैं

1. यदि गोचरवशास्त गुरू या शनि जन्म-कालीन चंद्रमा को देखे अर्थात जन्मकुंडली में चंद्रमा जिस राशि में हो उस राशि को देखे तो उस समय विवाह के योग बनते हैं।
2. यदि गोचरवशअस्त गुरू या शनि जन्मकालीन लग्न को अथवा सप्तम भाव को देखे तो उस समय भी विवाह के योग बनते हैं।
3. यदि गोचरवशास्त गुरू वर्तमान में चल रहे दशा नाथ या जन्मकालीन पंचमेश को देखे तो भी विवाह के योग बनते हैं।
4. जिस ग्रह की दशा चल रही हो वह ग्रह गोचर वशत शुक्र अथवा सप्तमेश को देखे तो भी विवाह के योग बनते हैं।

सुखमय दाम्पत्य जीवन के योग

व्यक्ति का चरित्र ही परिवार एवं समाज का निर्माण करता है यही कारण है कि ऋषियों ने विवाह हेतु चरित्र निर्धारण करने वाले शुभ ग्रहों को सुखमय दाम्पत्य जीवन का आधार माना है। लग्नेश के बली होकर सप्तम भाव में स्थित होने पर जातक की भार्या सद्गुणों से युक्त होती है एवं ऐसी पत्नि द्वारा कुल की अभिवृद्धि करती है।यदि सप्तमेश शुभ ग्रह के नवांश में हो या शुभ ग्रह की राशि में हो शुभ ग्रह द्वारा देखा जाता हो तो पत्नि सद्गुणों से संपन्न होती है।

कष्टप्रद दाम्पत्य जीवन के योग

यदि नीच राशि में स्थित गुरु सप्तम भाव में स्थित हो तो जातक की पत्नि मर जाती है यह स्थिति कर्क लग्न की कुंडली में संभव है इसी प्रकार सप्तम भाव में मीन राशि में शनि हो तो जातक की पत्नि मर जाती है यह स्थिति कन्या लग्न की कुंडली में बन सकती है।शनि या मंगल के नवांश में जातक व्याभिचारी होता है। सूर्यपुत्र शनि एवं मंगल के साथ गुरू हो तो तब भी यह फल हो सकता है।

दाम्पत्य जीवन घर की आधारशिला है सृष्टि का सृजन भी इसी भाव से जन्म लेता है।

कुंडली के बारह भाव :दोहे

प्रथम भाव से कीजिए, तन रंग रूप विचार
सुख दुख बुद्धि साथ में, निद्रा रोग विकार

दूजा घर देता हमें, धन सुख ज्ञान विवेक
वाणी मित्र कुटुंब का, ऐसे बिंदु अनेक

तीजे घर से जानिए, साहस बल अनुमान
भाई बहन धीरज सभी, यौगिक सारा ज्ञान

चौथे घर से कीजिए, माता रोग विचार
विद्या गृह निर्माण अरु, सुख दुख पेट विकार

पंचम घर देता हमें, संतति सुख दुख ज्ञान
विद्या शक्ति देव की, गर्भाशय फल जान

षष्ठ भाव से कीजिए, दुश्मन रोग विचार
चिन्ह चोट का साथ में, दुर्व्यवहार विकार

सप्तम से मिलता हमें, साझेदारी ज्ञान
वैवाहिक सुख दुख सभी, संबंधित अज्ञान

अष्टम घर से कीजिए, आयू मृत्यु विचार
आकस्मिक धन लाभ का, संग में रोग विकार

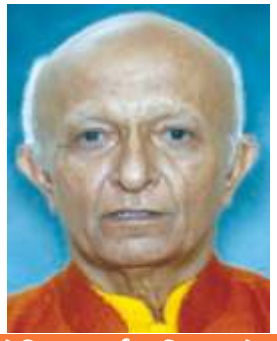
नवम भाव से जानिए, धर्म ज्ञान अरु भाग्य
पाप पुण्य अरु साधना, तीरथ सुख सौभाग्य

दशम भाव से कीजिए, रोजगार का ज्ञान
धन धंधा कैसा मिले, मिटे सकल अज्ञान

ग्यारह घर है लाभ का, धन आवक का ज्ञान
बड़े बहन भाई सभी, सुख दुख को पहचान

बारह भाव बताएगा, व्यय संबंधी ज्ञान
दुराचरण अरु दंड का, मिटता सब अज्ञान।

ग्रहयोग से जानें, बच्चे घर से क्यों भागते हैं



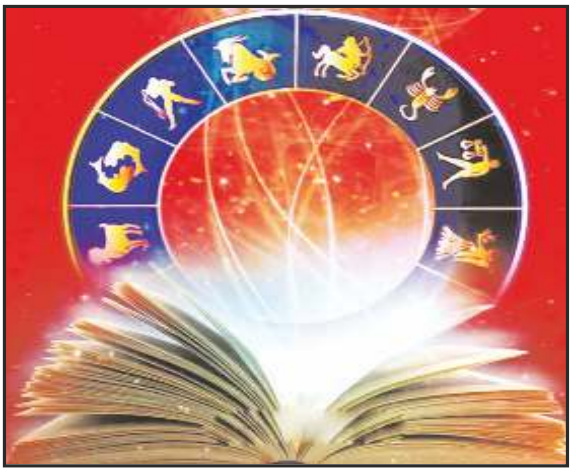
ज्योतिषाचार्य नलिन जोशी
मुंबई वैदिक ज्योतिषी एवं
वास्तु सलाहकार

सबको मेरा सादर प्रणाम। मैं नलिन जोशी ज्योतिषाचार्य एवं वास्तु सलाहकार, मुंबई से हूँ। आज मैं 'बच्चे घर से भाग जाता है', इस विषय में बता रहा हूँ।

राहु का गोचर भ्रमण जब लग्न सूर्य और चन्द्र के ऊपर होता है, वो डेढ़ साल के समय में, मंगल जब गोचर में सूर्य के ऊपर से या सूर्य के सामने से भ्रमण करता है तब अथवा सूर्य जब जन्म के मंगल के ऊपर से या मंगल के सामने से भ्रमण करता है वो एक महीने का समय और जब गोचर का चन्द्रमा, जन्म का शनि और मंगल के ऊपर से भ्रमण करता है उसी दिन बच्चे घर से भाग जाता है।

अब मैं आपको प्रेम विवाह करने वाले बच्चे जो घर से भागते हैं, उसके बारे में बताता हूँ। गोचर में जब राहु का भ्रमण जन्म के शुक्र पर से होता है और नवमांश के शुक्र पर से गोचर के राहु का भ्रमण के डेढ़ साल दरमियान, मंगल जब गोचर में सूर्य के ऊपर से या सूर्य के सामने से भ्रमण करता है तब अथवा सूर्य जब जन्म के मंगल के ऊपर से या मंगल के सामने से भ्रमण करता है वो एक महीने का समय और जब गोचर का चन्द्रमा, जन्म का शनि और मंगल के ऊपर से भ्रमण करता है उसी दिन बच्चे घर से भाग जाता है।

जन्म कुंडली में जब शनि और चन्द्र की युति होती है तो शनि और चन्द्र की प्रतियुति होती है। जब गोचर के उपयुक्त बताए गए योग हो तब बच्चे भागते हैं।



ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श
ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए



डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755-2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com
परामर्श के लिए
पूर्व समय लेना आवश्यक :

धन प्रयोग या धन निवेश कब करें-कब न करें



डॉ आर के पाठक 'मयंक'
सुबेदार भारतीय सेना (धर्म शिक्षक)

1. धन का निवेश सदैव सोच-समझकर एवं शुभ मुहूर्त में करना चाहिए।
2. शुभ समय में किया गया निवेश धन की वृद्धि और स्थिरता प्रदान करने वाला माना जाता है।
3. ज्योतिष शास्त्र में धन निवेश के लिए शुभ तिथि, वार, नक्षत्र और लग्न का विशेष महत्व है।
4. अनुकूल ग्रहों और शुभ नक्षत्रों में किया गया निवेश सफलता की संभावना को बढ़ाता है।
5. शेयर बाजार, बैंक जमा, संपत्ति तथा अन्य योजनाओं में निवेश से पहले उचित समय का विचार करना चाहिए
6. अशुभ मुहूर्त में किया गया निवेश कई बार अपेक्षित लाभ देने में बाधक हो सकता है।
7. निवेश करते समय केवल मुहूर्त ही नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिति और उचित योजना का भी ध्यान रखना आवश्यक है।
8. शुभ मुहूर्त में किया गया धन प्रयोग मानसिक संतोष और सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करता है।
9. अनुभवी ज्योतिषीय परामर्श और व्यावहारिक आर्थिक विवेक के साथ किया गया निवेश अधिक लाभकारी हो सकता है।
10. अतः धन की सुरक्षा, वृद्धि और समृद्धि के लिए शुभ मुहूर्त में विवेकपूर्ण निवेश करना उत्तम माना गया है।.

धन प्रयोग का निषेध समय कब

मुहूर्तशास्त्र में कुछ ऐसे समय बताए गए हैं, जिनमें धन का प्रयोग करना शुभ नहीं माना जाता। इन समयों में ऋण देना, निवेश करना, व्यापार में धन लगाना अथवा धन को कहीं छिपाकर रखना उचित नहीं माना गया है।

1. **निषिद्ध नक्षत्र-** मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, विशाखा, कृतिका, तीनों उत्तरा, रोहिणी, तीनों पूर्वा, भरणी एवं मघा नक्षत्र धन प्रयोग के संबंध में निषिद्ध माने गए हैं।
2. **निषिद्ध योग-** व्यतिपात योग में धन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
3. **निषिद्ध करण-** विष्टि (भद्रा) करण धन संबंधी कार्यों के लिए निषिद्ध माना गया है।
4. **निषिद्ध वार-** विशेष रूप से बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। रविवार, मंगलवार, शनिवार भी अच्छा नहीं है। लेकिन मंगलवार को कर्ज चुकाना अच्छा रहता है।
5. **निवेश में सावधानी-** निषिद्ध समय में शेयर, व्यापार अथवा अन्य योजनाओं में धन निवेश करने से बचना चाहिए।
6. **ऋण देने से बचें-** ऐसे समय में दिया गया धन समय पर वापस मिलने में कठिनाई हो सकती है।
7. **धन किसी को उधार देनेमें सावधानी-** निषिद्ध समय में धन को कहीं उधार देने मे उसकी पुनः प्राप्ति कठिन हो सकती है।
8. **चोरी का भय-** ऐसे अशुभ समय में चोरी होने पर चोरों के शीघ्र पकड़े जाने की संभावना कम मानी गई है।
9. **धन की पुनः प्राप्ति-** उपरोक्त निषिद्ध समय में धन की हानि होने पर उसकी पुनः प्राप्ति में बाधा आ सकती है।
10. **निष्कर्ष-** धन संबंधी महत्वपूर्ण कार्यों में शुभ मुहूर्त, विवेक एवं सावधानी का ध्यान रखना आवश्यक है।



काल गणना (ज्योतिष तत्वाङ्क)



दिगम्बर शास्त्री

विश्व के सभी व्यवहारिक या पारमार्थिक कार्य कालाधिन होते हैं और कालबोधक एकमात्र ज्योतिष शास्त्र है अतः ज्योतिष की उपादेयता सुविदित है। इसी दृष्टि से कहा गया है- ''प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ'' श्री स्कंद ज्योतिष के सिद्धांत स्कंध में सर्वमान्य भगवान श्रीसूर्यदेव द्वारा प्रतिपादित सूर्यसिद्धांत नामक ग्रंथ है जिसका गणित अन्य सिद्धांत की अपेक्षा सूक्ष्म माना गया है जो 'आदित्य सिद्धांत भवे च सूक्ष्मम्' इस उक्ति से स्पष्ट है।

काल ज्ञानार्थ ही भारत में सर्वत्र पंचांग बनता है जिसके आधार पर तिथि, नक्षत्र ,योग, वार और स्पष्ट ग्रह राश्यादि के ज्ञान होते हैं। पूर्व में सिद्धांत ग्रंथानुसार पंचांग का निर्माण होता था, बाद में तंत्र और करण ग्रंथ के अनुसार सुलभ प्रकार द्वारा पंचांग बनना प्रारंभ हुआ सृष्टि के प्रारंभ में इष्ट समय तक का अहर्गणवश ग्रह साधन की प्रक्रिया जिसमें हो उसे सिद्धांत कहा गया है। कलियुगादि से इष्ट काल पर्यंत का अहर्गणवश ग्रह ज्ञान की विधि जिसमें हो उसे तंत्र कहते हैं और इष्टशकाब्द द्वारा अहर्गणवश ग्रह साधन विधि जिसमें हो वह करण ग्रंथ कहा जाता है।

काल गणना में मन्वंतर, युगादि के पश्चात संवत्सर(संवत) का नाम आता है। युग भेद से सतयुग में ब्राह्म संवत् , त्रेता में वामन संवत्, परशुराम संवत् तथा श्री राम संवत् , द्वापर में युधिष्ठिर संवत् और कलयुग में विक्रम ,विजय ,नागार्जुन और कल्कि के संवत् प्रचलित हैं। इनके अतिरिक्त अनेक राजाओं तथा संप्रदायाचार्यों के नाम पर संवत् चलाए गए हैंभारतीय संवतों के अतिरिक्त विश्व में अन्यान्य धर्म के भी संवत् हैं। फिर भी भारतीय संवत् इन सबसे अत्यंत प्राचीन है। भारतीय संवत् गणित की दृष्टि से निश्चित किए गए हैं। संवत् चलाने की भारतीय विधि यह रही है कि जिसे अपना संवत् चलवाना हो उसका कर्तव्य होता है कि बहुत पहले अपने राष्ट्र तथा राष्ट्रवासियों में से प्रत्येक का ऋण अपनी ओर से चुकता करें जिससे राष्ट्र तथा राष्ट्र का कोई भी नागरिक किसी का ऋणी ना रहे

भारत का सर्वमान्य संवत विक्रम संवत है। ईस्वी साल महापुरुष क्राइस्ट के जन्म से माना जाता है, जिसका 2026 वां वर्ष व्यतीत हो रहा है क्राइस्ट के जन्म के पूर्व कलियुग के 3101 वर्ष बीत चुके थे क्राइस्ट के जन्म से 57 वर्ष पूर्व मालव्य देश (उज्जैन) में विक्रमादित्य नामक एक बहुत बड़ा पराक्रमी राजा हुए स्कंद पुराण के अनुसार कलियुग के 3000 वर्षबीत जाने पर विक्रमादित्य नामक एक बहुत प्रतापी राजा हुआ था कहा जाता है कि इन्होंने अपने अतुल पराक्रम से विदेशी शासकों को भारत से खदेड़ दिया इसी विजयोपलक्ष में इन्होंने अपना प्रसिद्ध विक्रम संवत् चलाया। ईस्वी साल में 57 जोड़ने से विक्रम संवत् बन जाता है जैसे 2026 में 57 जोड़ने पर 2083 विक्रम संवत् हुआ। उत्तर भारत में प्रायः विक्रम संवत् का ही विशेष प्रयोग किया जाता है।

क्राइस्ट के जन्म से 78 वर्ष के बाद शालिवाहन नामक राजा बड़ा पराक्रमी हुए। उनके समय से शालिवाहन शकाब्द आरंभ हुआ, जिसको साधारण भाषा में शका भी कहते हैं इसका प्रचार दक्षिण भारत में विशेष रूप से है ईस्वी साल से 78 घटाने पर शकाब्द निकल आता है जैसे 2026 से 78 घटा देने पर शेष 1948 हुआ।

उज्जैन के सम्राट महाराज विक्रम के इस वैज्ञानिक संवत् के साथ विश्व में प्रचलित ईस्वी सन् पर भी ध्यान देना चाहिए। ईस्वी सन् का मूल रोमन संवत् है पहिले यूनान में ओलिम्पियद् संवत् था, जिसमें 360 दिन का वर्ष माना जाता था रोमनगर की प्रतिष्ठा के दिन से वही रोमन संवत् कहलाने लगा ईस्वी सन् की गणना ईसा मसीह के जन्म के तीन वर्ष बाद से की जाती है। रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने 360 दिन के बदले 365 - 1/4 दिन के वर्ष को प्रचलित किया। छठी शताब्दी में डायोनिसियस ने इस सन् में फिर से संशोधन किया, किंतु फिर भी प्रतिवर्ष 27 पल 55 विपल का अंतर पड़ता ही रहा। सन् 1739 में यह अंतर बढ़ते - बढ़ते 11 दिन का हो गया तब पोप ग्रेगरीन ने आजा निकाली की इस वर्ष 2 सितंबर के पश्चात 3 सितंबर को 14 सितंबर कहा जाए और जो ईस्वी सन् चार की संख्या से विभाजित हो सके , उसका फरवरी मास 29 दिन का हो। वर्ष का प्रारंभ 25 मार्च के स्थान पर 1

जनवरी से माना जाए। इस आज्ञा को इटली, डेनमार्क, हॉलैंड ने उसी वर्ष स्वीकार कर लिया। जर्मनी और स्विट्जरलैंड ने सन 1759 में, इंग्लैंड ने सन् 1809 में , प्रशिया ने सन् 1835 में , आयरलैंड ने 1839 में और रूस ने 1859 में इसे स्वीकार किया। इतना संशोधन होने पर भी इस ईस्वी सन् में सूर्य की गति के अनुसार प्रतिवर्ष एक पल का अंतर पड़ता है। सामान्य दृष्टि से यह बहुत थोड़ा अंतर है, परंतु गणित के लिए यह अंतर बड़ी भूल है। 3600 वर्षों के बाद यही अंतर एक दिन का हो जाएगा और 36000 वर्षों के बाद 10 दिन का और इस प्रकार यह चालू रहा तो किसी दिन जून का महीना वर्तमान अक्टूबर के शीतल समय में पड़ने लगेगा। ऐसा होने पर गणित की दृष्टि से एक बड़ी भूल होगी। भारत का राष्ट्रीय संवत् तो केवल विक्रम संवत ही हो सकता है जिसमें आज तक कोई अंतर नहीं पड़ा और ना आगे पड़ने की संभावना है।

संवत्सर की उत्पत्ति वर्ष गणना के लिए होती है। ऋतु, मास, तिथि आदि सब वर्ष के ही अंग हैं, ब्राह्म पित्र्य, दैव , प्राजापत्य, गौरव ,सौर ,सावन ,चान्द्र और नाक्षत्र - इन भेदों से नौ प्रकार की वर्ष गणना होती है। इसमें ब्राह्म, दैव, पित्र्य और प्राजापत्य ये चार वर्ष कल्प तथा युग संबंधी लंबी गणना के काम में प्रयुक्त होते हैं शेष गौरव (बार्हस्पत्य) ,सौर ,सावन, चान्द्र और नाक्षत्र वर्ष साधारण व्यवहार के लिए हैं?। भारत को छोड़ अन्य देशों में प्रायः मुस्लिम देशों में चान्द्रवर्ष तथा दूसरों में सौर और सावन वर्षों से काल गणना की जाती है भारत में पांचो प्रकार की लौकिक वर्ष गणना का सामंजस्य और वर्ष में क्षय - वृद्धि करके बनाए जाते हैं। इस प्रकार लौकिक वर्ष गणना सौर वर्ष से होती है। इस सौर के दो भेद हैं - सायन और निरयण। इनमें निरयण वर्ष गणना केवल भारत में प्रचलित है। सभी देशों में सायन मत एक- सा माना जाता है क्योंकि सायन मत दृश्य गणित पर निर्भर है। निरयण गणना केवल यंत्रों के द्वारा ही संभव है; अतः निरयण वर्ष के मान में मतभेद हैं।

वारक्रम

इस बात को सभी जानते हैं की अहोरात्र दिनरात को कहते हैं और दिन सात होते हैं। पन्द्रह दिन का एक पक्ष और एक मास में दो पक्ष होते हैं एक कृष्ण(बदि) दूसरा शुक्ल(सुदि) बारह मास का एक वर्ष होता है, परंतु यह जानने योग्य बात है कि वारों (दिनों) का क्रम रविवार के बाद सोमवार तथा सोमवार के बाद मंगलवार आदि क्यों हैं? तात्पर्य यह है कि रविवार के बाद सोमवार ही क्यों हुआ ? दूसरा कोई वार क्यों नहीं ? हठात् यह लिखना पड़ता है कि इस बात को बतलाने का गौरव भारतवासियों को ही है और यह यह भी भली भाँति पुष्ट होता है कि सभ्यता के सूर्य का उदय तथा बुद्धि और ज्ञान का विकास सबसे प्रथम भारत में ही हुआ था। यूरोप निवासी भी संडे मंडे इत्यादीवारों का नाम इसी क्रम से बोलते हैं परंतु उन लोगों ने यह नहीं बतलाया कि इस क्रम से सप्तग्रह के नाम पर सात दिन क्यों माने गए हैं? सबसे दूरस्थ ग्रह शनि है शनि से कम दूरस्थ बृहस्पति , बृहस्पति से कम दूरी मंगल की, मंगल से कम दूरी पृथ्वी की। इससे कम दूर पर शुक्र है , शुक्र से भी काम दूरस्थ बुध हैं ,सबसे निकटस्थ चंद्रमा है। यदि इन ग्रहों को उनके दूरवर्ती क्रम से लिखे हैं तो वह इस क्रम से पड़ेंगे। शनि ,बृहस्पति, मंगल, सूर्य ,शुक्र ,बुध एवं चंद्रमा। अहोरात्रि एक दिनरात को कहते हैं अहो शब्द के 'हो' और रात्रि के 'रा' को मिलाने से सांकेतिक नाम होरा पड़ा एक अहोरात्रि के चौबीसवां भाग को होरा कहते हैं प्रलय के अंत में सूर्य का उदय होता है और उसी के प्रकाश से पृथ्वी और समस्त तारागण में उज्जवलता आती है। इस कारण जब सूर्य का उदय हुआ तो ऋषियों ने पहिला होरा सूर्य का माना और उसके बाद दूसरा होरा शुक्र का जो उसे समीपवर्ती ग्रह हैं उसके बाद बुध का, क्योंकि शुक्र से बुध निकटस्थ हैं इसी प्रकार चंद्रमा का ,पांचवा शनि का, छठा बृहस्पति का ,सातवां मंगल का। पुनः आठवां सूर्य का। इसी प्रकार से चौबीसवां या अंतिम होरा बुध का हुआ। उसके बाद जब सूर्योदय हुआ तो प्रथम हो रहा चंद्रमा का हुआ। इस कारण ऋषियों ने सूर्यवार के बाद चंद्रवार (सोमवार) नाम रखा अर्थात जिस दिन सूर्योदय होगा उसी दिन का सूर्योदय के समय प्रथम होरा होगा।

मलमास

मलमास दो प्रकार का है अधिक मास और क्षयमास। जिस मास में संक्रांति ना हो उसे अधिक मास और जिस महीने में दो संक्रांति हो उसे क्षयमास कहते हैं। पहले अधिकमास से दूसरा अधिक मास तीसवें महीने से लेकर आठवें या नवमें महीने में से कोई एक होता है क्षयमास तो 141 वर्षों पर होता है ना कि अधिक मास की तरह थोड़े समय पर। क्षयमास कार्तिक अगहन और पौष में से कोई एक होता है अन्य मास नहीं। जिस जिस वर्ष क्षयमास होता है उस वर्ष में दो अधिक मास होते हैं। एक क्षयमास से पहले और दूसरा क्षयमास के बाद। मलमास में नित्य एवं नैमित्तिक कर्म करते हैं परंतु काम्य कर्म का त्याज्य कहा गया है।

संदर्भ ग्रंथ -धर्म सिंधु

प्राणवायु का महत्व और प्राण और उसका स्वरूप क्या है जाने?



अजयकुमार श्यामानन्दी, वृन्दावन

प्राण वायु और उस प्राण वायु का स्वरूप क्या है ?- हमने अपने जीवन में व्यवहारतः अनेक बार 'प्राण' शब्द का प्रयोग किया है; परन्तु प्राण की वास्तविकता से हम प्रायः अनभिज्ञ रहते हैं, अथवा भ्रान्तिवश यह मान बैठते हैं कि प्राण का अर्थ जीव अथवा जीवात्मा है। किन्तु यह सत्य नहीं है। वास्तव में प्राण, वायु का ही एक स्वरूप है। जब वायु आकाश में गति करती है तो उसे वायु कहते हैं; और जब वही वायु हमारे शरीर में दश विभागों में कार्य करती है तो उसे प्राण कहा जाता है। वस्तुतः वायु का ही पर्यायवाची नाम प्राण है।

मूल प्रकृति के स्पर्श गुण युक्त वायु में रजोगुण की प्रधानता होने से वह चञ्चल, गतिशील और अदृश्य है। पंचमहाभूतों में वायु को प्रधान तत्त्व माना गया है। वात, पित्त और कफ में भी वायु ही बलिष्ठ है। शरीर में हाथ-पाँव आदि कर्मेन्द्रियाँ, नेत्र-श्रोत्र आदि ज्ञानेन्द्रियाँ तथा अन्य समस्त अवयव-अंग इसी प्राण से शक्ति पाकर सभी कार्यों का संपादन करते हैं। वह अति सूक्ष्म होने से सूक्ष्म छिद्रों में भी प्रवेश कर जाता है। प्राण को रुद्र और ब्रह्म भी कहा गया है। प्राण से ही अन्न का पाचन होता है; रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य, रज और ओजादि धातुओं का निर्माण होता है। प्राण ही निष्कासन (फल्गु पदार्थों को बाहर करने), उठने-बैठने, चलने-बोलने, चिंतन-मनन-स्मरण और ध्यानादि सभी स्थूल एवं सूक्ष्म क्रियाओं का कारण है। जब प्राण दुर्बल होता है तो शरीर के अंग-प्रत्यंग शिथिल होकर रोगग्रस्त हो जाते हैं; और जब प्राण सशक्त होता है तो शरीर में बल, पराक्रम, पुरुषार्थ, साहस, उत्साह, धैर्य, आशा, प्रसन्नता, तप, क्षमा आदि गुण उत्पन्न होते हैं।

बलिष्ठ, पुष्ट, सुगठित, सुंदर, लावण्ययुक्त, निरोग और दीर्घायु शरीर के बिना न लौकिक और न ही आध्यात्मिक लक्ष्य सिद्ध हो सकते हैं। अतः प्राणों की रक्षा अनिवार्य है। शुद्ध आहार, गहन निद्रा, ब्रह्मचर्य और प्राणायामादि साधनों के द्वारा शरीर को प्राणवान बनाना चाहिए। परमपिता परमात्मा द्वारा निर्मित सोलह कलाओं में से एक कला प्राण भी है। ईश्वर इस प्राण को जीवात्मा के उपयोगार्थ प्रदान करता है। ज्यों ही जीवात्मा शरीर में प्रवेश करता है, प्राण भी उसके साथ प्रवेश करता है; और ज्यों ही जीवात्मा शरीर का परित्याग करता है, प्राण भी उसके साथ निकल जाता है। सृष्टि के आदि में परमात्मा ने सभी जीवों को सूक्ष्म शरीर एवं प्राण प्रदान किए, जिससे जीवात्मा प्रकृति से संयुक्त होकर स्थूल शरीर धारण करता है।

सजीव प्राणी नासिका से श्वास ग्रहण करता है। वायु कण्ठ में पहुँचकर विशेष यंत्रणा से दश विभागों में विभक्त हो जाती है। शरीर में उनके विशिष्ट स्थान और कार्य के आधार पर प्राणों के भिन्न-भिन्न नाम हो जाते हैं।

मुख्य प्राण

1. प्राण	2. अपान
3. समान	4. उदान
5. व्यान उपप्राण	
1. नाग	2. कूर्म
3. कृकल	4. देवदत्त
5. धनञ्जय	

मुख्य प्राणों का स्वरूप

1. प्राण – इसका स्थान नासिका से हृदय तक है। नेत्र, श्रोत्र, मुखादि अवयव इसी के सहयोग से कार्य करते हैं। यह सभी प्राणों का राजा है। जैसे राजा अधिकारी नियुक्त करता है, वैसे ही यह प्राण अपान आदि अन्य प्राणों को भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए नियुक्त करता है।

2. अपान – इसका स्थान नाभि से पैरों तक है। यह गुदेन्द्रिय द्वारा मल-वायु का निष्कासन करता है; उपस्थेन्द्रिय द्वारा मूत्र एवं वीर्य का निष्कासन करता है; तथा योनि के द्वारा रज और गर्भ का कार्य करता है।

3. समान – इसका स्थान हृदय से नाभि तक है। यह खाए हुए अन्न को पचाकर उससे रस, रक्तादि धातुओं का निर्माण करता है।

4. उदान – यह कण्ठ से मस्तिष्क तक रहता है। शब्दोच्चारण, वमन (उल्टी) आदि कार्य इसका कार्यक्षेत्र हैं। साथ ही यह जीवात्मा को उसके कर्मानुसार उत्तम, अधम अथवा मानव योनि में ले जाता है।

5. व्यान – यह सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है। हृदय से 101 मुख्य नाड़ियाँ निकलती हैं, प्रत्येक में 100 शाखाएँ तथा प्रत्येक शाखा में 72,000 उपशाखाएँ होती हैं। इस प्रकार कुल 72,72,10,201 नाड़ी-शाखा-उपशाखाओं में व्यान व्याप्त है। इसका कार्य सम्पूर्ण शरीर में रक्त एवं प्राण का संचार करना और अन्य प्राणों को सहयोग देना है।

उपप्राणों का स्वरूप

1. नाग – कण्ठ से मुख तक रहता है। डकार, हिचकी आदि इसके कार्य हैं।

2. कूर्म – मुख्यतः नेत्रगोलकों में स्थित है। यह नेत्रों को ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ घुमाने और पलकों को खोलने-बन्द करने का कार्य करता है। आँसू भी इसी के द्वारा निकलते हैं।

3. कृकल – मुख से हृदय तक रहता है। यह जम्भाई (उबासी), भूख, प्यास आदि उत्पन्न करता है।

4. देवदत्त – नासिका से कण्ठ तक रहता है। इसका कार्य छींक, आलस्य, तन्द्रा और निद्रा लाना है।

5. धनञ्जय– यह सम्पूर्ण शरीर में व्यापक है। इसका कार्य शरीर के अवयवों को खिंचा रखना, माँसपेशियों को सुंदर बनाना आदि है। जीवात्मा के बाहर निकल जाने पर यह भी बाहर निकल जाता है; फलतः इसके अभाव में शरीर फूल जाता है।

जब शरीर विश्राम करता है, ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ स्थिर हो जाती हैं, मन शांत हो जाता है– तब भी प्राण और जीवात्मा जाग्रत रहते हैं। जीवन का आधार प्राण है। प्राण के संयोग से जीवन है और प्राण के वियोग से मृत्यु।

अतः जीव का अन्तिम साथी केवल प्राण ही है।

आत्मविश्वास बढ़ाने के ग्रह योग



श्रीमती बीना देसाई
मुंबई (महाराष्ट्र)

आत्म विश्वास का गुण जीवन में कार्य करने में सफलता और विजय दायक है ऐसा व्यक्ति यदि धनात्मक विचार वाला हो तो जीवन में समाज और परिवार के लिए उत्तम कार्य करने से सर्वमान्य होता है ।

आत्मविश्वास के भी दो प्रकार है ,एक सच्चाई वाला आत्मविश्वास और एक हम हमारे इर्दगिर्द के वातावरण में झूठी तारीफ वाले लोगो से यदि घिरे है तो हमारे आसपास के लोगो के द्वारा झुठी तारीफे करते रहने के कारण मन में सत्य असत्य के बिना विचार किए अधिक उत्साह वाले (over confidience) के कारण भी कभी कभी गलत निर्णय कर लेते है जोकि अहितकर होता है ।

ज्योतीष दृष्टि से

लग्न,लग्नेश, सूर्य,चंद्र ये चारों की शुभ स्थिति कुंडली मे जान लादेती है, अर्थात कुण्डली बली हो जाती है । लग्नेश अगर शुभ,उच्च, केंद्र,त्रिकोण से हो तो जीवन मे आसानी से कार्य करने की मान सिक बल देगा ,साथ ही कारक सूर्य ग्रह हमारा आत्मा है , वोह जब लग्नेश साथ हो, या शुभ स्थिति से हो इंसान की निरयण शक्ति सही दिशा मे और सही सिथतियों में ली जाएगी।

चंद्र ग्रह ये हमारा मान सिक स्तर को प्रभावित करता है इनका शुभत्व होना बहुत जरूरी है, वरना निर्यण शक्ति कमजोर होगी।

आत्मकारक ग्रह का महत्व हरेक कुंडली मे जो आत्मकारक ग्रह हो उसी ग्रह की विशेषता और लक्षण उस जातक के व्यवहार में होगी, जब वोह शुभ स्थिति से हो तोह आत्मा का इंट्यूशन सही मार्ग बतलायेगा।

दशा का विचार भी आत्मबल के लिए जरूरी शुभस्थान की दशा, केंद्र, त्रिकोण की दशा जब दैनिक जीवन के कार्य मैं आसानी देगा तोह कुदरती आत्मविश्वास बढ़ेगा।

गोचर राहु, केतु,शनि का गोचर जब भी लग्नेश,चंद्र से जाना मन को विचलित करता है, साथ आत्मविश्वास टूटता है

आत्मबल के लिए भाव 3,4,5,10,11 भाव भी विचारणीय है।

तीसरा विचारों का स्थान उसमे मंगल का प्रभाव अच्छा आत्मविश्वास देगा

चौथा मानसिकता यहाँ बैठा शुभ ग्रह धैर्य, शुभविचार और दसवा पर द्रष्टि कार्य भी अपने हाथों से सही तरीके से करवाएगा जिसे ग्यारहवा एकादशवा भाव ऑपरेट होगा ,और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

आत्मविश्वास कितना सही है , वो पाँचा भाव देखना आवश्यक है, ये बुद्धिमता साथ (अम्लीकरण) क्रियान्वयन का भाव है, किया कार्य किस प्रकार होगा साथ कितना लाभ तब आत्मविश्वास बढ़ेगा।

बुध ग्रह जितना बुध ग्रह स्ट्रोंग धनात्मक होगा उसका आत्मविश्वास अच्छा होगा , जो बुद्धि और वाणी का कारक है, सही विचार, सही तरीके से करना, साथ प्रस्तुत करना ये सब बुध करवाएगा जिससे आत्मविश्वास बढ़ेगा पर अनुभव से पाया कि ग्रह स्थिति कितनी भी शुभ हो पर गोचर से लग्नेश की स्थिति सही ना हो साथ चँद्र पीड़ित होने से हमारा मन विचलित थोड़े समय के लिए भीभृमित बन सकता है।



पुराणों तथा संहिता में नक्षत्र विचार



आचार्य अखिलेख कुमार पाण्डेय
फतहपुर शिवहर (बिहार)

नक्षत्र ग्रह विप्राणां वीरुधां चाप्यशेषतः !
सोमं राज्ये दधह्याम यज्ञानां
तमसामापि !!
.....(श्री विष्णु पुराण)

श्री विष्णु पुराण के अनुसार दक्ष प्रजापति की 27 कन्याएं ही नक्षत्र रूपा हैं जिनका विवाह चंद्रमा से हुआ है ! इन्हीं 27 नक्षत्रों का भोग चन्द्र द्वारा किये जाने पर चैत्र आदि एक चन्द्र मास पूर्ण होता है ! सभी पुराणों में नक्षत्रों के महत्व तथा शुभाशुभ फल का वर्णन किया गया है ! ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्रों का उपयोग बालक/बालिका के जन्म के समय शुभाशुभ विचार, नामकरण, मुहूर्त विचार, ग्रहचार, मेलापक तथा जातक के अन्य सभी शुभ अशुभ फल विचारने के लिए किया जाता है ! अग्नि पुराण, नारद पुराण, गरुड़ पुराण मत्स्य पुराण तथा अन्य कई पुराणों तथा बृहत्संहिता, भद्रबाहु संहिता, नारद संहिता, वशिष्ठ संहिता आदि में नक्षत्रों का वर्णन निम्न प्रकार से मिलता है –

नक्षत्रों के देवता और नाम के अक्षर

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं! प्रत्येक चरण का एक अक्षर निश्चित है! बालक/बालिका का जन्म नक्षत्र के जिस चरण में होता है उससे सम्बंधित अक्षर पर उसका नामकरण किया जाता है !

नक्षत्र	नक्षत्र के देवता	चरणवार अक्षर
अश्वनी	अश्वनी कुमार	चू चे चो ला
भरणीं	यम	ली लू ले लो
कृतिका	अग्नि	अ इ उ ए
रोहिणी	ब्रह्मा	ओ वा वी वू
मृगशिरा	चन्द्र	वे वो का की
आर्द्रा	शिव	कु घ ड छ
पुनर्वसु	अदिति	के को हा ही
पुष्य	बृहस्पति	हु हे हो डा
आश्लेषा	सर्प	डी डू डे डो
मघा	पितर	मा मी मू मे
पूर्वाफाल्गुनी	भग	मो हा टी टू
उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	हे हो पा पी
हस्त	सूर्य	पु ष ण ठ
चित्रा	त्वष्टा	पे पो रा री
स्वाति	पवन	रू रे रो ता
विशाखा	इन्द्राग्नि	ती तू ते तो
अनुराधा	मित्र	ना नी नु ने
ज्येष्ठा	इंद्र	नो या यी यु
मूल	राक्षस	ये यो भा भी
पूर्वाषाढ़	जल	भू ध फ ढ
उत्तराषाढ	विश्वेदेव	भे भो जा जी
श्रवण	विष्णु	खी खू खे खो
धनिष्ठा	वसु	गा गी गु गे
शतभिषा	वरुण	गो सा सी सू
पूर्वा	भाद्रपद रुद्र	से सो दा दी
उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	दु थ झ ञ
रेवती	पूषा	दे दो चा ची

. 'अग्नि पुराण' के अनुसार प्रति मास अपने जन्म नक्षत्र के दिन नक्षत्र देवता का विधिवत पूजन अर्चन करने से उस व्यक्ति के लिये उस महीने का फल शुभ रहता है और कष्ट की निवृति होती है ! जन्म नक्षत्र ज्ञात न होने पर प्रचलित नाम के पहले अक्षर से नाम नक्षत्र ज्ञात कर सकते हैं और उस नाम के अनुसार जो नक्षत्र आया हो उसके देवता की पूजा करना चाहिए!

विभिन्न श्रेणी के नक्षत्र और उनका प्रभाव :

1. उर्ध्वमुखी नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य- रोहिणी ,आर्द्रा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरा भाद्रपद यह नौ नक्षत्र उउर्ध्वमुखी हैं अर्थात ऊपर की ओर मुख वाले हैं ! इन में विवाह आदि मंगल कार्य, राज्याभिषेक, ध्वजारोहण, मंदिर निर्माण, बाग़-बगीचे लगवाना, चहार दीवारी बनवाना, गृह निर्माण आदि कार्य करवाना शुभ रहता है!

2. अधोमुखी नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य– कृतिका, भरणीं, आश्लेषा, विशाखा, मघा, मूल, पूर्वाषाढ़, पूर्वा-फाल्गुनी, पूर्वा भाद्रपद यह नौ नक्षत्र अधोमुखी अर्थात नीचे की तरफ मुख वाले हैं! इन में तालाब कुएं खुदवाना, नलकूप लगवाना, चिकित्सीय कार्य, विद्याध्ययन, खनन, लेखन कार्य, शिल्प कार्य, भूमि में गड़े पदार्थों को निकालने का कार्य करना शुभ रहता है !

3. तिर्यङ्मुख नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य – अनुराधा, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, अश्वनी,

स्वाति, रेवती यह नौ नक्षत्र सामने मुख वाले हैं, जिन में यात्रा करना, खेत में हल जोतना, पत्राचार करना, सवारी करना, वाहन निर्माण आरम्भ करना शुभ होता है !

4. ध्रुव संज्ञक नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य – रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तरा भाद्रपद यह चार नक्षत्र ध्रुव संज्ञक नक्षत्र हैं जिनमें क्रय-विक्रय करना, हल जोतना, बीज बोना आदि कार्य करना शुभ होता है !

5. क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य – हस्त, अश्वनी, पुष्य यह तीन नक्षत्र क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र हैं जिनमें यात्रा करना, दुकान लगाना, शिल्प कार्य, रति कार्य, ज्ञान अर्जन करना शुभ होता है !

6. साधारण संज्ञक नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य – विशाखा तथा कृतिका यह दोनो साधारण नक्षत्र हैं जिनमे सभी कार्य किये जा सकते हैं !

7. चर संज्ञक नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य – धनिष्ठा, पुनर्वसु, शतभिषा, स्वाती तथा श्रवण नक्षत्र चर संज्ञक नक्षत्र हैं जिन में यात्रा करना, बाग- बगीचे लगाना, तथा परिवर्तनशील कार्य करना शुभ होता है !

8. मृदुसंज्ञक नक्षत्र तथा उसमें सफल होने वाले कार्य – मृगशिरा, अनुराधा, चित्रा, रेवती मृदु नक्षत्र हैं जिनमें आभूषण निर्माण, खेल कूद, नवीन वस्त्र धारण करना, गीत-संगीत से सम्बंधित कार्य करना शुभ होता है !

नक्षत्रों की अन्धाक्षादि संज्ञाएँ

रोहिणी नक्षत्र से आरम्भ करके क्रमशः चार चार नक्षत्र अंध, मंद, मध्य तथा सुलोचन नक्षत्र कहलाते हैं !

1. अंध नक्षत्र में खोई वस्तु बिना विशेष प्रयत्न के पुनः प्राप्त हो जाती है !

2. मंद नक्षत्र में खोई वस्तु प्रयत्न करने पर बड़ी कठिनता से मिलती है !

3. मध्य नक्षत्र में खोई वस्तु का पता तो चल जाता है पर प्राप्ति नहीं होती !

4. सुलोचन नक्षत्र में खोई वस्तु का न तो पता चलता है और न ही प्राप्ति होती है !

स्पष्टार्थ चार्ट का अवलोकन करें –

अन्धाक्ष मंदाक्ष मध्याक्ष सुलोचन नक्षत्र
रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु
पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाफाल्गुनी
उ0फा0 हस्त चित्रा स्वाति
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल
पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ अभिजित श्रवण
धनिष्ठा शतभिषा पू0भाद्रपद उ0भाद्रपद
रेवती अश्वनी भरणी कृतिका !

शीघ्र कष्टपूर्वक पता चलेगा न पता चलेगा

लाभ विलम्ब से, पर प्राप्ति नहीं, प्राप्ति होगी परन्तु विलम्ब से,

कुलाकुल संज्ञक नक्षत्र तथा उनके फल – अश्वनी, कृतिका, मृगशिरा, पुष्य, चित्रा, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा यह सभी कुल संज्ञक नक्षत्र हैं, जिनमें कोर्ट में मुकदमा दायर करने वाला व्यक्ति हार जाता है तथा युद्ध के लिए प्रस्थान करने वाले की पराजय होती है !

रोहिणी, ज्येष्ठा, रेवती, पुनर्वसु, स्वाति, हस्त, अनुराधा, भरणीं, पूर्वाभाद्रपद, आश्लेषा अकुल संज्ञक नक्षत्र हैं, जिनमें आक्रमणकारी शत्रु पर विजय प्राप्त करता है और न्यायालय में मुकदमा दायर करने वाला व्यक्ति जीत जाता है !

आर्द्रा, शतभिषा, पूर्वाषाढ़ा, कुलाकुल नक्षत्र है जिनमें मुकदमा दायर करने अथवा युद्ध आरम्भ करने पर दोनों पक्षों में संधि की अधिक सम्भावना बनती है!

नक्षत्रों की भूकम्प आदि संज्ञाएँ –

विचारणीय काल में सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उससे –

पांचवें नक्षत्र को विद्युत्,
सातवें नक्षत्र को भूकम्प,
आठवें नक्षत्र को शूल,
दसवें नक्षत्र को अशनि,
चौदहवें नक्षत्र को निर्घातपात,
पन्द्रहवें नक्षत्र को दण्ड,
अठारहवें नक्षत्र को केतु,
उन्नीसवें नक्षत्र को उल्का,
इक्कीसवें नक्षत्र को मोह,
बाइसवें नक्षत्र को निर्घात,
तेइसवें नक्षत्र को कम्प,
चौबीसवें नक्षत्र को कुलिश तथा
पच्चीसवें की परिवेश संज्ञा होती है !

इन नक्षत्रों में कार्य आरम्भ करने पर प्रायः सफलता नहीं मिलती !

नक्षत्र एवं वार के योग से बनने वाले शुभाशुभ मुहूर्त

अश्वनी आदि 27 नक्षत्रों तथा रवि आदि 7 वारों के संयोग से उत्पन्न शुभाशुभ प्रभाव देने वाले योगों का विभिन्न पुराणों और संहिताओं में वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है –

औत्पातिक योग

निम्नलिखित वार तथा नक्षत्र के योग से औत्पातिक योग बनता है, जिनमें यात्रा तथा अन्य शुभ कार्य आरम्भ करने से उत्पात, रोग, हानि होने की सम्भावना बनी रहती है !

क्रमांक वार नक्षत्र :

1 - रविवार विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा!

2 - सोमवार पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ श्रवण!

3 - मंगलवार धनिष्ठा शतभिषा पू0भाद्रपद !

4 - बुधवार अश्वनी भरणीं रेवती !

5 - गुरुवार रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा !

6 - शुक्रवार पुष्य आश्लेषा मघा !

7 - शनिवार उ0फाल्गुनी हस्त चित्रा !

अमृत योग

रविवार को मूल, सोमवार को श्रवण, मंगलवार को उत्तरा भाद्रपद, बुधवार को कृतिका, गुरुवार को पुनर्वसु, शुक्रवार को पूर्वाफाल्गुनी तथा शनिवार को स्वाति

नक्षत्र हो तो अमृत योग बनता है जो सभी कार्यों में सिद्धि प्रदायक होता है !

सिद्धि योग

रविवार को हस्त,
सोमवार को मृगशिरा,
मंगलवार को अश्वनी,
बुधवार को अनुराधा,
गुरुवार को पुष्य,
शुक्रवार को रेवती तथा
शनिवार को रोहिणी नक्षत्र पड़ रहा हो तो सिद्धि योग बनता है जो सभी कार्यों में सिद्धि देने वाला होता है !

विष योग

यह कुण्डली वाला विषयोग नहीं है, यह पंचांग का विषयोग है, परन्तु यह भी बुरा प्रभाव डालता है !

रविवार को भरणी,
सोमवार को चित्रा,
मंगलवार को उत्तराषाढा,
बुधवार को धनिष्ठा,
गुरुवार को शतभिषा,
शुक्रवार को रोहिणी तथा
शनिवार को रेवती नक्षत्र हो तब विष योग बनता है जो अपने नाम के अनुसार सभी कार्यों में अशुभ फलदायक होता है!

आनन्दादि योग

क्रम रविवार सोमवार मंगलवार बुधवार गुरुवार शुक्रवार शनिवार आनन्दादि

योग शुभाशुभ फल

1. अश्वनी मृगशिरा आश्लेषा हस्त अनुराधा उत्तराषाढ शतभिषा आनंद सिद्धि !
2. भरणीं आर्द्रा मघा चित्रा ज्येष्ठा अभिजित पूर्वाभाद्रपद कालदंड मृत्यु !
3. कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल श्रवण, उत्तराभाद्रपद, धूम्र असुख !
4. रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती, धाता सौभाग्य !
5. मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा, शतभिषा, अश्वनी, सौम्य सुख !
6. आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वा भाद्रपद, भरणीं, ध्वांक्ष धनक्षय !
7. पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, कृतिका, ध्वज सौभाग्य !
8. पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, श्रीवत्स संपदा !
9. आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा, शतभिषा, अश्वनी, मृगशिरा, वज्र क्षय !
10. मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वा भाद्रपद, भरणीं, आर्द्रा, मुद्गर धनक्षय!
11. पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तरा भाद्रपद, कृतिका, पुनर्वसु, छत्र राजसम्मान !
12. उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, मित्र पुष्टि !
13. हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा, शतभिषा, अश्वनी, मृगशिरा, आश्लेषा, मानस सौभाग्य !
14. चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, आर्द्रा, मघा, पद्म धनागम !
15. स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, कृतिका पुनर्वसु पूर्वाफाल्गुनी लुम्ब धनहानि !
16. विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्पात संकट !
17. अनुराधा, उत्तराषाढा, शतभिषा, अश्वनी, मृगशिरा, आश्लेषा हस्त, मृत्यु मृत्यु !
18. ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद, भरणीं, आर्द्रा, मघा, चित्रा, काण क्लेश!
19. मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद, कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, सिद्धि कार्यसिद्धि !
20. पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, शुभ कल्याण !
21. उत्तराषाढा, शतभिषा, अश्वनी, मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, अमृत राजसम्मान !
22. अभिजित, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, मूल, धन हानि !
23. श्रवण, उत्तराभाद्रपद, कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, गद विद्यालाभ !
24. धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, मातंग कुलवृद्धि !
25. शतभिषा, अश्वनी, मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा, रक्ष महावृद्धि !
26. पूर्वाभाद्रपद, भरणीं, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, चर कार्यसिद्धि!
27. उत्तराभाद्रपद, कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, स्थिर गृहारम्भ !
28. रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, प्रवर्द्धमान विवाह !

त्रिपुष्कर योग

रवि, शनि तथा मंगलवार को भद्रा तिथि (द्वितीया ,सप्तमी,द्वादशी)और तीन पाद एक ही राशि में होने वाले नक्षत्र कृतिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ तथा पूर्वा भाद्रपद हो तब त्रिपुष्कर योग बनता है, जिसमें लाभ या हानि त्रिगुणित कही गयी है !

द्विपुष्कर योग

रवि, शनि या मंगलवार को भद्रा तिथि (द्वितीया, सप्तमी,द्वादशी)और दो पाद एक ही राशि में होने वाले नक्षत्र मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा हो तब द्विपुष्कर योग होता है जिसमें लाभ या हानि दुगनी हो जाती है !

सिद्ध योग

शुक्रवार को नंदा तिथि (प्रतिपदा, षष्टी, एकादशी) !

बुधवार को भद्रा तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) !
मंगलवार को जया तिथि (तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी) !
शनिवार को रिक्ता तिथि (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी) तथा;
गुरूवार को पूर्णा तिथि (पंचमी, दशमी, पूर्णिमा) हो तब सिद्ध योग होता है जिसमें सभी कार्यों में सिद्धि मिलती है !

दग्ध योग

सोमवार को एकादशी, मंगलवार को पंचमी, बुधवार को तृतीया, गुरूवार को षष्टि, शुक्रवार को अष्टमी तथा शनिवार को नवमी तिथि हो तब दग्ध योग होता है जिसमें आरम्भ किये कार्य सफल नहीं होते !

संवर्त योग

रविवार को सप्तमी, बुधवार को प्रतिपदा तिथि हो तब संवर्त योग होता है जो शुभ कार्यों में बाधक होता है !

चंडीशचंडायुध योग

विचारणीय काल में सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उस से तत्कालीन आश्लेषा, मघा, चित्रा अनुराधा रेवती या श्रवण नक्षत्र तक की गणना करने पर जो संख्या आये वही संख्या यदि अश्वनी नक्षत्र से तत्कालीन चन्द्र नक्षत्र की हो तब चण्डीशचण्डायुध योग होता है, जिसमें शुभ कार्यों का आरम्भ वर्जित है!

पंचक नक्षत्र

धनिष्ठा के अंतिम दो चरण, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती इन पांच नक्षत्रों के समूह को पंचक कहा जाता है ! यह पांचो नक्षत्र कुम्भ तथा मीन राशि के अंतर्गत आते हैं ! पंचक लगने पर लकड़ी और घास, ज्वलनशील वस्तुओं का संग्रह, दक्षिण दिशा की यात्रा, मृतक का दाह संस्कार, खाट बनवाना या बिनवाना, छप्पर छाना, छत डालना, हरा बाँस कगटना त्याज्य होता है ! पंचकों में उपरोक्त कार्य करने पर अग्नि भय, रोग, दण्ड, हानि और शोक होता है !

गण्डमूल नक्षत्र
पुराणों में गण्डमूल नक्षत्र

पुराणों में अनेक स्थानों पर गंडांत नक्षत्रों का उल्लेख किय गया है ! रेवती नक्षत्र की अंतिम चार घड़ियाँ, अश्वनी नक्षत्र की पहली चार घड़ियाँ गंडांत कही गई हैं ! मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा एवम मूल नक्षत्र भी गंडांत हैं ! विशेषतः ज्येष्ठा तथा मूल के मध्य का एक प्रहर अत्यंत अशुभ फल देने वाला है ! इस अवधि में उत्पन्न बालक/बालिका व उसके माता - पिता को जीवन का भय होता है ! गंडांत नक्षत्रों को सभी शुभ कार्यों को त्याग देना चाहिए ! 28 वें दिन उसी नक्षत्र में गण्डमूल दोष की शांति कराने पर दोष की निवृति हो जाती है !

स्कन्द पुराण के काशी खंड में सुलक्षणा नाम की कन्या का वर्णन है जिसका जन्म मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ था तथा उस बाला के माता - पिता दोनों का देहांत उस के जन्म के कुछ समय के बाद ही हो गया था ! नारद पुराण के अनुसार मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण को छोड़ कर शेष चरणों में तथा ज्येष्ठा नक्षत्र के अंतिम चरण में उत्पन्न संतान विवाहोपरांत अपने ससुर के लिए घातक होती है ! ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या अपने जेठ के लिए तथा विशाखा में उत्पन्न कन्या अपने देवर के लिए अशुभ फल का संकेत कारक होती है ! दिन में गंडांत नक्षत्र में उत्पन्न संतान पिता को रात्रि में माता को व संध्या काल में स्वयम को कष्ट कारक होता है !

ज्योतिष शास्त्र में गण्डमूल नक्षत्र

फलित ज्योतिष के जातक पारिजात, बृहत् पराशर होरा शास्त्र, जातकाभरणं इत्यादि सभी प्राचीन ग्रंथों में गण्डांत नक्षत्रों तथा उनके प्रभावों का वर्णन दिया गया है! अश्वनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल तथा रेवती नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र हैं!

अश्वनी नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तब पिता को कष्ट तथा अन्य चरणों में शुभ होता है !

आश्लेषा नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तब शुभ, दूसरे में धन हानि, तीसरे में माता को कष्ट तथा चौथे में पिता को कष्ट होता है ! यह फल पहले दो वर्षों में ही दिखाई पड जाता है !

मघा नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तब माता पक्ष को हानि, दूसरे में पिता को कष्ट तथा अन्य चरणों में शुभ होता है ! ज्येष्ठा नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तब बड़े भाई को कष्ट, दूसरे में छोटे भाई को कष्ट, तीसरे में माता को कष्ट तथा चौथे में पिता को कष्ट होता है ! यह फल पहले वर्ष में ही दिखाई पड जाता है!

ज्येष्ठा नक्षत्र एवम मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या अपने भाई के लिए घातक होती है !

मूल नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तब पिता को कष्ट दूसरे में माता को कष्ट तीसरे में धन हानि तथा चौथे में शुभ होता है ! मूल नक्षत्र व रविवार के योग में उत्पन्न कन्या अपने ससुर का नाश करती है ! यह फल विवाह के पहले चार वर्षों में ही परिलक्षित हो जाता है !

जातकाभरणं के अनुसार जन्म के समय मूल नक्षत्र हो तथा कृष्ण पक्ष की तृतीया, दशमी या शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि हो एवम मंगल, शनि या बुधवार का दिन हो तब सारे कुल के लिए अशुभ होता है ! मूल नक्षत्र के साथ राक्षस, यातुधान, पिता, यम व काल नामक मुहुर्तेशों के काल में जन्म हो तब गण्डमूल दोष का प्रभाव अधिक विनाशकारी होता है !

रेवती नक्षत्र के चौथे चरण में जन्म हो तब माता-पिता के लिए अशुभ तथा अन्य चरणों में शुभ होता है !

अभुक्त मूल ज्येष्ठा नक्षत्र की अंतिम दो घटियाँ तथा मूल नक्षत्र की आरम्भ की दो घटियाँ अभुक्त मूल हैं, जिनमें उत्पन्न बालक, कन्या, अपने ही कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं ! इनकी शान्ति कराना अति आवश्यक होता है !

पांच दिन का पर्व समूह दीपावली



भारतीय सनातन परम्परा के अनुसार प्राचीन काल से ही दीपोत्सव पर्व मनाया जाता है। भगवान श्री राम का वन गमन से अयोध्या लौटना इसी दिन माना जाता है साथ ही समुद्रमंथन के समय माता लक्ष्मी प्राकट्य होना और भगवान विष्णु की अर्धांगिनी होने से भी दीपावली पर्व मनाया जाता है। यह पर्व पांच दिवसीय पर्व श्रंखला निम्नानुसार मनाया जाता रहा है। यह 5 दिन निम्नाअनुसार है-

1. **धनतेरस / धनवंतरीजयंती**
2. **रूपचौदस /नरक चौदस**
3. **महालक्ष्मी पूजन दीपावली**
4. **गोवर्धन पूजा /अन्नकूट**
5. **भाईदूज/दवातकलम पूजा**

उपरोक्त दीपावली की पांच दिनों की पर्व श्रृंखला आदि काल से चली आरही है।

दीपावली पर्वप्रमुख रूप से एक स्वच्छता का पर्व है सबसे पहले पूरे भवन और इर्दगिर्द की साफ सफाई पर्व आरंभ होने के पहले ही कर लेना चाहिए। स्वच्छता रखने में ही भगवान और लक्ष्मी जी का निवास होता है।

धनतेरस धनवन्तरी पूजन

धनतेरस का दिन ही धन्वंतरि जयंती मानी जाती हैस्वास्थ्य एवं सुख समृद्धि वर्धन यह पर्व अपनी विशेषता रखता है जिसमेंस्वास्थ्य के देवता धनवंतरीके जन्मोत्सव के रूप में यह पर्व मनाया जाता है।समुद्र मंथन के समय देवताओं और दानवों दोनों के द्वारा क्षीरसागर का मंथन किया गया था उस समुद्र मंथन के समय स्वास्थ्य के देवता भगवान धन्वंतरि जी का प्राकट्य हुआ था यह 24 अवतारों में से एक हैकार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी के दिन भगवान धन्वंतरि का पूजन किया जाता है इस दिनसायं काल घर के बाहर दरवाजे पर एक पात्र में अनाज रखकर उसके ऊपर यमकोण की तरफ दीपक लगाने का विधान है जिससे कि अल्प मृत्यु का भय नहीं होता ; तथा परिवारके सदस्य स्वस्थ रहते हैं।धन प्राप्त करने का मुख्य उद्गम जो भी है उसकी पूजन करके धन के स्वामी कुबेर का पूजन का भी धन तेरस पर विशेष महत्व हैग्रामीण क्षेत्र में गाय और बैल की पूजन करते हैं आज बदली परिस्थिति में बैल के स्थान पर ट्रेक्टर और उसके यंत्रों की पूजन करना चाहिए।

6 नवम्बर 2026 शुक्रवार को धनतेरस, लक्ष्मी वरूण की पूजन वृषभ स्थिर लग्न में 6 बजकर 11 मिनिट से 8 बजकर 19 मिनिट के बीच करनी चाहिए।

रूप चौदस (नरकचतुर्दशी)

कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिनरूप चौदस जिसे नरक चतुर्दशी भी कहते हैंरूप और सुंदरता केलिए सौंदर्य के स्वामी भगवान कृष्ण की पूजन की जाती है सूर्योदय पूर्व तेल का उबटन लगाकर अपामार्ग और शतावरी का पौधा जल में डालकर स्नान करने और बाद में घर के दक्षिण की ओर दीपक लगाने का महत्व है।कहा जाता है कि भगवान श्री कृष्ण ने इस दिन नरकासुर का वध किया था इस दिन दीपदान करने से रोग एवं कष्ट से मुक्ति मिलती है।

दीपावली पर्व

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या कोदीपावली का पर्व मनाया जाता हैइस पर्व के बारे में मान्यता है किसमुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से महालक्ष्मी प्रकट हुई थी इन्होंने भगवान विष्णु को अपने पति के रूप में स्वीकार किया था इस कारण दीपावली के दिन सुख समृद्धि की कामना से लक्ष्मी पूजन की जाती है लक्ष्मी चलायमान चंचला है इस कारण स्थिर लग्न में लक्ष्मी पूजन का महत्व है।दिनांक 8 नवम्बर रविवार को दिन में 11.28 से अमावस्या तिथि आरंभ होती है जो कि 9 नवम्बर सोमवार को दिन में 12 बजकर 32 मिनिट तक अमावस्या तिथि रहेगी दोनों दिन प्रदोष काल 8 नवम्बर को अमावस्या होने के कारण 8 नवम्बर 2026 को दीपावली पर्व उपयुक्त मान्य किया है।



प्रदोष काल में भोपाल शहर अनुसार 6 बजकर 05 मिनिट से 8 बजकर 02 मिनिट तक वृषभ लग्न रहेगा। इसमें शुभ एवं अमृत के चौघड़िया के अन्तर्गत 6 बजकर 05 मिनिट से 8 बजकर 57 मिनिट के बीच पूजन करना उत्तम तथा लक्ष्मी पूजन का दीपावली पर्व मनाया जाना चाहिए। जो अमावस्या तिथिको निशीथकाल में सिंह लग्न में लक्ष्मीपूजन करते है उनके लिए भी भोपाल शहर अनुसार रात्री 12 बजकर 36 मिनिट से 2 बजकर 50 मिनिट के बीच लक्ष्मी पूजन करना चाहिए।

गोवर्धन पूजन / अन्नकूट

9 नवंबर को दिन में 12 बजकर 32 मिनिट तक अमावस्या तिथि होने के कारण गोवर्धन पूजन दोपहर बाद अथवा अन्नकूट महोत्सव 10 नवंबर मंगलवार को मनाया जाना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा गोवर्धन पर्वत अपनी कनिष्ठ उंगली में धारण इंद्र के प्रकोप के कारण अतिवर्षा से बचाव के लिए किया था इसी कारण कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गाय के गोबर से गोवर्धन बनाकर उनकी पूजन प्रत्येक परिवार में की जाती है।

दिन में सभी प्रकार के 56 प्रकार व्यंजन का भोग भगवान को लगाकरअन्नकूट किया जाता है। वर्षा के समय में चातुर्मास में पत्तीदार सब्जियां ; पालक ; मेथी ;मूली ; बैगन आदि का चतुर्मास मे कई धर्म प्राण व्यक्तियों द्वारा त्याग किया जाता है।जिसे प्रतिपदा के दिन अन्नकूट के भोजन में सम्मिलित किया जाकर नियमित सेवन में लिया जाता है।

भाईदूज / कलम दवात पूजन

कार्तिक शुक्ल पर पक्ष द्वितीया को भैया दूज का पर्व मनाया जाता है। इस दिन भाई बहन के घर जाकर भोजन करता है इस पर्व के बारे में पौराणिक मान्यता है कि यम एवं यमुना भगवान सूर्य की संतान है यमराज की व्यस्तता के कारण यमुना अपने भाई से नहीं मिल पाती थी एक दिन वह स्वयं भाई से मिलने आई ; इस पर यमराज प्रसन्न हुए एवं बहन को वर मांगने को कहा बहन यमुना ने कहा कि आज के दिन मुझ मेंअर्थात यमुना नदी में जो स्नान करेगा उसे यमलोक नहीं जाना पड़ेगा;इस पर यमराज ने तथास्तु कहा।उस दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि थी इस कारण इस दिन यमुना नदी में स्नान करने कभी विशेष महत्व है साथ ही बहन के घर भाई स्वयं जाकर बहन को संतुष्टि पूर्वक द्रव्य दान देकर भोजन करता है ;इसका विशेष महत्व बताया गया है भाई एवं बहन को स्वास्थ्य लाभ तथा बहन को सौभाग्य वृद्धि होती है। दिनांक 11 नवंबर 2026 बुधवार को यह पर्व सवेरे 7 से 9 बजे के बीच और दिन में 12 बजकर 15 मिनिट से 13 बजकर 30 मिनिट के बीच मनाये जाने का शुभ समय है। इसी समय के बीच लेखनी का उपयोग करने वाले व्यक्ति को अपनी दवात कलम का पूजन भी करना शुभ फल में वृद्धि करेगा। अधिकांशतः चित्रगुप्त समाज में दवात कलम पूजन भाई दूज ही के दिन करते हैं।

उत्तम फलित विवेचन के लिए ग्रहों की अवस्था ज्ञान



डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

फलित ज्योतिष के सबसे प्रचीन और विशाल ग्रंथ बृहत्पाराशरहोरा शास्त्र में महर्षि पाराशर ने अवस्था फलाध्याय नामक अध्याय में कुल 168 श्लोक वर्णित करते हुए अवस्थाओं का विस्तार से वर्णन किया है। जिसमें बाल, जाग्रत, दीप्त, लज्जित और शयन अवस्था इस प्रकार यह पांच अवस्थाओं की जानकारी फलित के लिए आवश्यक मानी गई हैं।

षड्भिर्र शैः क्रमादोजे समे स्वाद्वयुत्क्रमान्मुने
ग्रहो बालः कुमारश्च युवा वृद्धो मृतस्तथा
बाले फलं : चतुर्थी शमर्थं कौमार के स्मृतम्
पूर्णं तु मरणे किश्चिद्वद्धे शून्यं मृते ग्रहे

महर्षि पाराशर ने जाग्रत स्वप्न एवं सुषप्ति यह तीन स्थितियां ग्रहों की बताई है।

जो ग्रह स्वराशि या उच्च राशि में हो- जाग्रतावस्था

जो ग्रह मित्र या सम ग्रह की राशि में हो- स्वप्नावस्था

जो ग्रह शत्रुराशि का नीचराशि में हो- सुषुप्तिवस्था

उपरोक्तनुसार जाग्रतावस्था में पूर्ण फलदायक

स्वप्नावस्था में मध्यम फलदायक

सुषुप्तावस्था में शून्य फलदायक माना गया है।

जाग्रतावस्था अर्थात दीप्तावस्था

जाग्रत अवस्था अर्थात दीप्तावस्ता में भी कुल 9 प्रकार के भेद माने गए है-

महर्षि पाराशर ने ग्रहों की 9 अवस्थाओं को न निम्नानुसार माना है-

1. दीप अवस्था - उच्च ग्रह

2. स्वस्थ्य अवस्था - स्वराशि मे

3. मुद्रित अवस्था - अधिमित्र राशि मे

4- शांत अवस्था- मित्र राशि में

5- दीन अवस्था - समग्रह की राशि में

क्रं.	अवस्था	विषमराशि में अंश	समराशि में अंश	फल
1	बाल	01-06	25-30	चतुर्थांश फल
2	कुमार	07-12	19-24	आधा फल
3	युवा	13-18	13-18	पूर्ण फल
4	वृद्ध	19-24	7-12	स्वल्प फल
5	मृत	25-30	1-06	शून्य फल

6- दुखी अवस्था - शत्रु ग्रह की राशि में

7- विकल अवस्था- पाप ग्रह से युक्त राशि में

8- खल अवस्था - पापग्रह की राशि में

9 - क्रुद्ध अवस्था - सूर्य से युक्त होने पर

दीप अवस्था के 9 प्रकार में ग्रह होने पर फल

1.दीप अवस्था में ग्रह दशा में राज्य, उत्साह धनधान्य, बंधुबांधवो का सुख, राज कृपा, शौर्यवृद्धि।

2. स्वस्थावस्था के ग्रह की दशा में जातक को स्वास्थ्य लाभ, विद्याप्राप्ति, यशवृद्धि, प्रेम भाव, स्त्री और धन तथा परिवार सुख, भूमि भवन लाभ।

3- मुदितावस्था के ग्रह की दशा में मनुष्य को वस्त्र लाभ, द्रव्य लाभ,पुत्र,धन, धैर्य, धार्मिक यात्रा अथवा धर्मकार्य।

4 - शांतावस्था के ग्रह की दशा में सुख, समृद्धि, संतोष, आनन्द,धन सुख और राज कृपा प्राप्त होती है।

5. दीनावस्था वाले ग्रह की दशा में त्रुटीपूर्ण निर्णय से कष्ट, नीच और हीन प्रकार की आदतें, बंधुबांधव का विरोध, रोग और पीड़ा।

6 - दुखितग्रह की दशा में व्यक्ति अनेक समस्याओं से दुखी भाई बन्धुओं से विरोध, अग्निभय, चोर भय, राजभय।

7- विकलावस्था के ग्रह की दशा में मानसिक चिताएँ, विकलंता मनोरोग, मित्रादि की ओर से चिंताएं, स्त्री, पुत्र वाहन चोर आदि से कष्ट होता है।

8- खलावस्था के ग्रह की दशा में क्लेश, अपने जन का वियोग शत्रुकृत बाधाएँ, भूमि ,भवन, वाहन, अथवा धन का नुकसान निन्दा का पात्र होता है।

9. क्रूद्ध ग्रह की दशा होने पर अनेको अशुभ कर्मों की ओर प्रेरित होना, धन स्त्री, पुत्र, बंधुबांधवों से विरोध और मस्तिष्क अथवा नेत्र पीड़ा होती है।

ग्रहों की लज्जित अवस्था

महर्षि पाराशर ने ग्रहों की लज्जित आदि अवस्था को भी छः प्रकार से वर्णित किया है

1. लज्जित
2. गर्वित
3. क्षुधित
4. तृषित
5. मुदित
6. क्षोभित अवस्था

1. लज्जित अवस्था

जन्म कुण्डली के पंचमभाव में स्थित ग्रह यदि राहु या केतु से युक्त हो अथवा सूर्य शनि, मंगल में से किसी भी ग्रह से युक्त हो तो वह ग्रह लज्जित अवस्था में होता है। तथा इन्हें संतान संबंधित चिंताएं रहती है।

2. गर्वित अवस्था

जो ग्रह अपनी व स्व उच्च राशि में या मूल त्रिकोण राशि में स्थित हो तो है वह ग्रह गर्वित अवस्था में माना जाता है। ऐसे व्यक्ति नए आवास, राजकीय वैभव, कला में निपुण, निरंतर सुख वृद्धि और व्यवहार में कुशलता होती है।

3. क्षुधित अवस्था

शत्रु राशि में स्थित या शत्रु ग्रह से युति करके या शत्रु ग्रह द्वारा दृष्ट ग्रह क्षुधित अवस्या में माना गया है। ऐसे व्यक्ति मानसिक चिंताग्रस्त, शत्रुविवाद, आर्थिक क्षति, आत्मिय जनों से विवाद, शोक और मोह ग्रस्त होते हैं।



4. तृषित अवस्था

जो ग्रह शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, जलचर राशि में स्थित ग्रह शत्रु ग्रह की दृष्टि में हो तो उसे तृषित अवस्था में माना जाता है। ऐसे व्यक्ति दुष्कार्य प्रवृत्ति स्वजनों से विवाद में धन अपव्यय, दुर्बलता, और मानहानि होती रहती है।

(5) मुदित अवस्था

मित्र की राशि में स्थित ग्रह, मित्र ग्रह से युति अथवा मित्र ग्रह से दृष्टि में होने वाला ग्रह तथा गुरु से युति या दृष्टि वाला ग्रह मुदित अवस्था वाला होता है।

ऐसे योग वाला जातक विशाल भवन, आभूषण और उत्तम वस्त्र धारण करने वाला, आत्मिय लोगों से उत्तम सम्बंध शत्रुनाश और उत्तमबुद्धि और विद्या को प्राप्त करता है।

6. क्षोभित अवस्था

क्षोभित अवस्था के ग्रह जो कि सूर्य से युक्त होकर पापग्रह तथा शत्रुग्रह से दृष्ट होने पर क्षोभित अवस्था का होता है. दरिद्रता, दुर्बुद्धि , धनहानि , पैर में समस्या तथा धन प्राप्ती में बाधाएं आती है. राजकीय भय भी ऐसे जातक को होता है।

शयनादि अवस्था

ग्रहों की शयनादि अवस्थाओं के बारे में महर्षि पाराशर ने अपने ग्रन्थ में बारह अवस्थाएं वर्णित की है, जो कि क्रमशः

1.शयन
2. उपवेश
3. नेत्र पाणि
4. प्रकाशन
5. गमन
6. आगमन
7. सभा निवास
8. आगम
9. भोजन
10. नृत्यलिप्सा
11. कौतुक और निद्रा वस्था

इन बारह क्षयनादि अवस्थाओं के साधन हेतु एक गणितीय विधि का वर्णन मिलता है।

जिस ग्रह की अवस्था जानना हो उसके स्थित नक्षत्र की संख्या को ग्रह की संख्या से गुणा करके गुणनफल को ग्रह के स्थित नवमांश संख्या से गुणा करके उसमें जातक के चन्द्र नक्षत्र की संख्या तथा जन्मकालिक इष्टघरी और जन्म लग्न को जोड़कर 12 से भाग देने पर शेष राशि को क्रमशः 12 अवस्थाओं में से गिनकर कर देखना चाहिए।

श्री अष्टलक्ष्मी स्तोत्रम् ।।



आदिलक्ष्मी

सुमनसवन्दित सुन्दरि माधवि चन्द्र सहोदरि हेममये ।।
मुनिगणमण्डित मोक्षप्रदायिनि मञ्जुळभाषिणि वेदनुते ।।
पङ्कजवासिनि देवसुपूजित, सद्गुणवर्षिणि शान्तियुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, आदिलक्ष्मि सदा पालय
माम् ।। 1 ।।

धान्यलक्ष्मी

अहिकलिकल्मषनाशिनि कामिनि, वैदिकरूपिणि वेदमये ।।
क्षीरसमुद्भव मङ्गलरूपिणि, मन्त्रनिवासिनि मन्त्रनुते ।।
मङ्गलदायिनि अम्बुजवासिनि देवगणाश्रित पादयुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, धान्यलक्ष्मि सदा पालय
माम् ।। 2 ।।

धैर्यलक्ष्मी

जयवरवर्णिनि वैष्णवि भार्गव, मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये ।।
सुरगणपूजितशीघ्र फलप्रद, ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते ।।
भवभयहारिणि पापविमोचनि, साधुजनाश्रित पादयुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ।।
3 ।।

गजलक्ष्मी

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि, सर्वफलप्रद शास्त्रमये ।।
रथगज तुरगपदादि समावृत, परिजनमण्डित लोकनुते ।।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित, तापनिवारिणि पादयुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, गजलक्ष्मि रूपेण पालय
माम् ।। 4 ।।

सन्तानलक्ष्मी

अहिखग वाहिनि मोहिनि चक्रिणि, रागविवर्धिनि ज्ञानमये ।।
वारिधि लोकहितैषिणि, स्वरसप्त भूषित गाननुते ।।
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर, मानववन्दित पादयुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, सन्तानलक्ष्मि त्वं पालय
माम् ।। 5 ।।

विजयलक्ष्मी

जय कमलासन सद्गतिदायिनि, ज्ञानविकासिनि गानमये ।।
अनुदिनमर्चित कुङ्कुमधूसर भूषित वासित वाद्यनुते ।।
कनकधरास्तुति वैभव वन्दित, शङ्कर देशिक मान्य पदे ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, विजयलक्ष्मि सदा पालय
माम् ।। 6 ।।

विद्यालक्ष्मी

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि, शोकविनाशिनि रत्नमये ।।
मणिमयभूषित कर्णविभूषण, शान्तिसमावृत हास्यमुखे ।।

नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि, कामित फलप्रद हस्तयुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, विद्यालक्ष्मि सदा पालय
माम् ।। 7 ।

धनलक्ष्मी

धिमिधिमि धिंधिमि धिंधिमि धिंधिमि, दुन्दुभि नाद सुपूर्णमये ।।
घुमघुम घुंघुम घुंघुम घुंघुम, शङ्खनिनाद सुवाद्यनुते ।।
वेदपुराणेतिहास सुपूजित, वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते ।।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि, धनलक्ष्मि रूपेण पालय
माम् ।। 8 । ।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अक्टोबर

व्यापार अथवा रोजगार में अनेकों प्रकार की रुकावटें आसकती है।अपने ईष्ट बल से कम हो सकेगी।स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी है। मास का उत्तरार्घ शुभ फलदायक है अपने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा मांगलिक कार्यों के लिए शुभ यात्राएं होंगी। मास की 3,7,12, 15,20,24 एवं 28 तारीख शुभ है।

नवम्बर

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर

यह मास पारिवारिक सुख की दृष्टि से उत्तम है। कुछ नई योजनाएं सामने आएगी। उन्हें मूर्त रूप देने के लिए प्रयास करें। पिछले रुके हुए कार्य या धन प्राप्ति के संयोग भी बनेंगे। उच्च वर्ग के लोगों से संबंध स्थापित होंगे जो आगामी जीवन के लिए अनुकूल रहेंगे। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास की 6, 8, 14, 17, 22 तारीख के उत्तम है।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अक्टोबर

इस मास में अपने कार्यों में उतार-चढ़ाव रहेगा। पिछले समय से आरहीविध्न बाधाएं दूर होगी। परिवार की तरफ से चिंताएं रहेगी। संतान एवं पत्नी के स्वास्थ्य के लिए खर्च करना पड़ेगा।व्यर्थ का विरोध रहेगा रिश्ते कमजोर नही हो इसका ध्यान रखें। मास की 3, 11, 13,20, 25 27 एवं 29 तारीखों में निर्णय लेने मे सावधानी रखें।

नवम्बर

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, प ी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

दिसम्बर

मास के आरंभ में व्यर्थ की चिंताओं में कमी आएगी लेकिन कार्यों में मेहनत अधिक कराएगा। धन संबंधी आवक में विलम्ब रहे। व्यापारी वर्ग को समय पर धन लाभ और उत्तम सम्मान मिलेगा। नई योजना के लिए अधिक मिलेगा। कार्य थोड़े में परिवर्तन के लिए मन बनेगा। अधिक परामर्श से कन्फूशन बढ़ेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें मास की 1, 4, 10, 17, 23 एवं 29 तारीख शुभ है।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अक्टोबर

यह मास शुभ फलदायक है आकस्मिक धन लाभ के भी योग बन सकते हैं मांगलिक कार्य की योजनाएं सफल रहेगी। राजकीय कार्य में सफलता मिलेगी अनावश्यक कार्य बोझ रहेगा। संतान के प्रगति के लिए उत्तम समय है मास की 4,7,19,25,27 सावधानी रखनी चाहिए।

नवम्बर

मास का पूर्वार्ध आपके लिए शुभ और सफलता दायक है। अपने पुराने मित्रों से संपर्क होगा। कोई रुका हुआ कार्य पूर्ण होने की उम्मीद है। मास का उत्तरार्ध अपने नियमित कार्यों में सफलता दायक है राजकार्यो में विजय, यश और सफलता मिलेगी। संतान पक्ष से संतुष्टि रहेगी व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल ।कृषक वर्ग को अपने नियमित कार्यों में लाभ। नौकरी वालों को अधिक व्यस्तता पूर्ण तथा विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन में संतोष मिलेगा इस माह की 3, 6, 9 ,12 ,18 ,24 एवं 30 तारीख शुभ रहेगी।

दिसम्बर

यह मास रचनात्मक कार्यों के लिएउत्तम है। अनेक बड़े लोगों से संबंध बढ़ेंगे अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी। सामाजिक कार्य दायित्व अधिक रहेगे इससे व्यस्तता बढ़ेगी।व्यापारी वर्ग कोअपने कार्य समय पर निष्पादन करने से अच्छी लाभप्रद सफलता मिल जाएगी। पत्नी का स्वास्थ कमजोर रहेगा। यात्रा बढ़ेगी मास के 3, 9, 13, 17, 23 तारीखे शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अक्टोबर

इस मास में पुराने शत्रु और रोग का शमन होगा कुछ महत्वपूर्ण निर्णय से कार्यों में सफलता मिलेगी नौकरी करने वालों का समय शुभ है। व्यर्थ के भ्रमण जरूर होंगे।पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। कुछ धार्मिक कार्यों की यात्रा भी होगी। संतान को प्रगति का समय भी मिलेगा। मास की 2, 8 10, 18, 22 एवं 28 तारीखों में सावधानी रखने की जरूरत है।

नवम्बर

यह माह आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। अपने लाभ का अनुपात व्यय से कम होगा इसलिए संतुलित व्यय करने का प्रयास करना चाहिए। पारिवारिक कार्यों में अधिक व्यस्तता रहेगी। कोर्ट कचहरी के विवाद रहेंगे। दूसरों के विवाद से बचना चाहिए। व्यापारी वर्ग को आय में कमी, नौकरी वर्ग वालों को व्यस्तता अधिक। कृषक वर्ग अपने कार्यों में लाभ, विद्यार्थियों को अनुकूल समय है। (तारीख 5,7,13,17,23,30 शुभ है)

दिसम्बर

यह मास आपको रोजगार में सफलता दायक रहेगा। किसी अन्य के भरोसे रहना कार्य में रुकावट दायक रह सकता है इस बात का ध्यान रखें।मास में भ्रमण अधिक रहेगा अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।कुछ पुराने सहयोगी मित्र से सहयोग प्राप्त होगा।व्यापारी वर्ग को लाभ हेतु कठिन मेहनत की आवश्यकता रहेगी। संतान की तरफ से मानसिक संतुष्टि रहेगी। मास की 2,6 ,12,19 23 एवं 27 तारीख शुभ है।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

अक्टोबर

समाज में मान सम्मान की वृद्धि होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों से अच्छे संबंध बनेंगे। कर्म पक्ष में विरोध की कमी होगीलेकिन अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी है। पारिवारिक उत्तरदायित्व बढ़ेगा।कुछ आवश्यक लेकिन व्यर्थखर्च ऐसे होंगे जिन्हें करना ही पड़ेगा। मास की 2,4,18, 22,24, 26 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर

अपने कार्यों मेंआप सजगता रखते ही हैं लेकिन फिर भीमानसिक द्वंद्व मेंचिंतित रहते हैं। इस मास भीअपने कार्यों को समय पर कर लें ताकि चिंताग्रस्त ना रहना पडे। पारिवारिक चिताओं से ग्रस्त रहेंगे।खर्च की अधिकता भी रहेगी। संतान के कार्यों में व्यस्तता अधिक रहेगी किसी समाज या परिवार के मांगलिक कार्य दायित्व में अपना अधिक समय देना पड़ सकता है। मास की 3, 7, 11, 16, 23 और 26 तारीख शुभ है।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अक्टोबर

यह मास सफलता के लिए अच्छा है।अपने रुके हुए कार्य समय पर पूरे होंगे।कुछ नए कार्य को करने के लिए भी सफल योजना बनेगी।विरोधियों काऔर शत्रुओं का भय काम होगा मानसिक अशांति दूर होगी तथा कुछवरिष्ठ लोगों से संबंध अच्छे होंगे। मास की 3,8,12,14,16,23 एवं 27 तारीख शुभ है।

नवम्बर

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

दिसम्बर

विगत माह की कठिनाईयों से कार्य इस माह के अंत तक सफलता दायक रहेंगे। साझेदारों अथवा विश्वसनीय मित्र के भरोसे छोड़े गए कार्य की पुनः पुनरावृत्ति करनी पड़ेगी। कोर्ट, कचहरी के विवादों में असफलता नहीं हो इसका ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक हानि प्रद। नौकरी वर्ग वालों को सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को ऋणग्रस्तता में कमी करना हितकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण संभव। मास की 1,3,6,9,11,19,27,29 शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अक्टोबर

इस मास में मन के उत्साह में कमी रहेगी।समाज के बड़े लोगों से अनावश्यक वैचारिक मतभेद रहेंगे।बच्चों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें।अधिक व्यय से बचना चाहिए।यथा संभव भ्रमण को टालें। अपना मानसिक तनाव को कम रखने का प्रयास करें। स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए। तारीख 2, 4, 6, 12, 18, 22, 25 एवं 28 शुभ है।

नवम्बर

मास का पूर्वार्ध खर्चीला है अपनी बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के कारण भी व्यय संभव है। माह के उत्तरार्द्ध में अपने पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होने के योग हैं पुराने मित्रों से वैचारिक मतभेद ना हो इसका ध्यान रखे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल, कृषक वर्ग को समयअधिक खर्चीला, नौकरी वर्ग को अपने कार्यों से संतोष, विद्यार्थी वर्ग कोशिक्षा मे व्यवधान रह सकता हैं। मास की 3 6 नो 12 18 24 एवं 30 तारीख शुभ है।

दिसम्बर

मास के प्रारंभ में आर्थिक रुकावटें दूर होंगी। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे। दापत्य सुख उत्तम रहेगा। किसी राजकीय कार्य के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च की संभावना मास के उत्तरार्द्ध में रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य से लाभ। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर सहयोग मिलेगा। मास की 2, 4, 6, 8, 10, 13, एवं 21 तारीखों में सावधानी बरतें।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अक्टोबर

पिछले माह का कमजोर समय अब दूर होकर सुधार पर आएगा दुर्जन लोगोंसे दूररहे नेत्रऔर उदर विकार संभव है आर्थिक दृष्टि से लाभ की कोई नवीन योजना सामने आएगी।मास का उत्तरार्ध किसी नए कार्य से या पुराना रुका हुआ धन लाभदायक रहेगा। पत्नी का स्वास्थ्य का ध्यान रखे। मास के अंतमें शुभ समाचार से मन प्रसन्न रहेगा। मासकी 4, 5, 9 , 16, 24 एवं 28 तारीखें शुभ है।

नवम्बर

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

दिसम्बर

अधिक कार्य के कारण शारीरिक कमजोरी महसूस करेंगे इसी कारण माह के उत्तरार्द्ध में कार्य में बाधाएं तथा पेंडिंग रह सकता है। कार्यों की सफलता में रूकावट आना संभव है। नियमित कार्यों में सतर्कता रखना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को खर्च पर नियंत्रण, नौकरी वर्ग को अधिक कठिनाई से सफलता, कृषक वर्ग को उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को स्थान परिवर्तन अथवा शिक्षा में बदलाव संभव है। मास की तारीख 3, 6, 12, 18, 24 शुभ है।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

अक्टोबर

यह मास अनुकूल हैअपने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे।कुछ नई मशीनरी क्रय करने के योग बनेंगे।स्थाई संपत्ति भी बना सकेंगे।अन्न और वस्त्र का लाभ होगा।कुछ पुरानी रुकी हुई धनराशि भी प्राप्त हो सकती है।कुछ पुराने मित्रों के प्रभाव से आपक पिछले दिनो से हो रहा विरोध कम होगा। मास की 4 1015 22 2 6 एवं 30 शुभ है।

नवम्बर

अपने कार्य के विस्तार की ललक इस माह में पूरी होगी। इस समय होने वाले निर्णय अपने भविष्य के लिए अनुकूल रहेंगे। अपने कार्य के लिए अधिक समय देवे ताकि सफलता मिल सके। पत्नी एवं संतान की ओर से स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ और अच्छे संपर्क की वृद्धि। नौकरी वर्ग वालों को संतोष, कृषक वर्ग को उत्तमलाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कष्ट। (तारीख 2, 4, 8 12, 16, 20, 24, 28 उत्तम रहेगी)

दिसम्बर

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

अक्टोबर

आपकी राशि के लिए यह मास नवीन कार्य अथवा नवीन रोजगारआरंभ करने के लिए उत्तम है। आपकी मानसिक स्थिति भी प्रसन्नचित रहेगी परिवार में आमोद प्रमोद ऐश्वर्य के साधन की उपलब्धता होगी।पत्नी के स्वास्थ्य में थोड़ा ध्यान रखें लेकिन स्वयं के पुराने रोग का निवारण संभव है। राजकीय कार्यों में सावधानी रखें यथासमय पर कार्य पूर्ण करते रहें।मास की7, 11, 12,17,24 एवं 27 तारीख शुभ है।

नवम्बर

मास का पूर्वार्ध कार्य की गतिविधियों में वृद्धि करेगा। धन लाभ के योग बनेंगे सरकारी काम में सफलता मिल सकेगी मास के उत्तरार्ध में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी आर्थिक खर्च अधिक होगा। व्यापारिक वर्ग को अधिक खर्च कारक समय, कृषक वर्ग को समुचित लाभ, नौकरी वर्ग को कार्य में पूर्ण रूप से यश मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के विद्यालय में सामान्य दिक्कतें रह सकती है मास की 3, 6, 12, 15, 21 ,24 तथा 30 तारीख से शुभ है।

दिसम्बर

आपके लिए मास का पूर्वार्द्ध लाभप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ समय पर होगा तथा पुरानी रुकी हुई समस्या का निराकरण होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास के अंतिम 2 सप्ताह में कार्य की अधिकता रहेगी लेकिन आर्थिक रुकावटें दूर होगी। मानसिक चिंताएं अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है माह की 2, 5,7, 9,15,19,27 तारीख अनुकूल रहेंगी।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अक्टोबर

इस माह परिवार / रिश्तेदार से नियमित उत्तम वर्ताव रखें। आपकी वाणी में भी थोड़ी सावधानी रखें। आपकी कही गई बात का गलत अर्थ न निकले सतर्कता बरते अन्यथा; इससे आपका कारोबार और पारिवारिक जीवन पर भी असर पड़ सकता है। शांतिपूर्ण समय व्यतीत करें। अनावश्यक विवाद और शत्रुता ना बढ़ाएं। मास की 4,6,13,15,19 23,25 एवं 27 तारीख अशुभ है।

नवम्बर

अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

दिसम्बर

यह मास विगत समय से अनुकूल रहेगा। कठिनाईयों के कार्य आसानी से हल होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। संतान को अपने कार्य में सफलता से परिवार में सुख-शांति महसूस करेंगे। साझेदारों पर अनावश्यक क्रोध से बचें। अन्यथा विवाद संभव है। मास के उत्तरार्द्ध में भ्रमण यथासंभव टालें। कृषक वर्ग को समय रहते अपने कार्य निपटाने पर लाभ संभव। नौकरी वर्ग को स्थानांतरण। विद्यार्थी वर्ग को सफलता रहेगी। मास की 2,7,11,17,19,24 तारीख शुभ है।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

अक्टोबर

इस महिने में कुछ पुराने रुके हुए कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रयास करना शुभ है।लेकिन राजकार्यों में अथवा समाज में किसी प्रकार का विवाद की स्थिति बन सकती है। रोजगार /कार्य कमजोर रहेगा। आर्थिक स्थिति की चिंता रह सकती है। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास की 2 ,4,9 11,20, 22,28 और 30 तारीख शुभ नहीं है।

नवम्बर

मास का पूर्वार्द्ध आपको अपने कार्यों में सफलता दायक है ।नए कार्यों की रूपरेखा बनेगी समय को व्यर्थ ना खोंए, सदुपयोग करें। मास का उत्तरार्ध आपके लिए भ्रमण तथा आर्थिक कठिनाईयों का रहेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च। कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि। नौकरी करने वालों को परिवर्तन संभव. ।विद्यार्थी वर्ग को सामान्य दिक्कतें रहेगी।

दिसम्बर

मासका पूर्वार्द्ध रुके हुए कार्य पूर्ण करने में सहयोगी रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी तथा राजकीय कार्य समय पर हल होंगें। मास के उत्तरार्ध में आपको अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। सुखद यात्रा भी संभव है अपने कार्यों में विशेष ध्यान देने से सफलता मिलेगी व्यापारी वर्ग को सामान्य समय ।कृषक वर्ग को आर्थिक कठिनाइयां। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग का समय का ध्यान रखना चाहिए। मास की 3, 6 9 ,12, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

अक्टूबर 2026 के व्रत पर्व

1 अक्टूबर, गुरुवार - चन्द्र षष्ठी, षष्ठी तिथि श्राद्ध

2 अक्टूबर, शुक्रवार - गांधी जयन्ती एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती, सप्तमी तिथि श्राद्ध

3 अक्टूबर, शनिवार - अष्टमी तिथि श्राद्ध

4 अक्टूबर, रविवार - मातृनवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्री श्राद्ध

5 अक्टूबर, सोमवार - दसमी तिथि श्राद्ध

6 अक्टूबर, मंगलवार - एकादशी तिथि श्राद्ध

7 अक्टूबर, बुधवार - द्वादशी तिथि श्राद्ध

8 अक्टूबर, गुरुवार - त्रयोदशी तिथि श्राद्ध, प्रदोष व्रत

9 अक्टूबर, शुक्रवार - चर्तुदशी तिथि श्राद्ध

10 अक्टूबर, शनिवार - स्नानदान श्राद्ध की सर्वपितृ अमावस्या, पितृ विसर्जन

11 अक्टूबर, रविवार- आश्विन शुक्ल पक्ष आरंभ, शारदीय नवरात्र आरंभ, घट स्थापना

12 अक्टूबर, सोमवार - चन्द्रदर्शन

15 अक्टूबर, गुरुवार - उपांगललिता व्रत, नक्त पंचमी (उड़ीसा)

16 अक्टूबर, शुक्रवार - बिल्व निमंत्रण षष्ठी

17 अक्टूबर, शनिवार - बिल्व सप्तमी

18 अक्टूबर, रविवार - भद्रकाली अवतार, सरस्वती पूजन

19 अक्टूबर, सोमवार - महाअष्टमी, दुर्गाष्टमी

20 अक्टूबर, मंगलवार - महानवमी, नवमी हवन, सायं विजयादशमी

22 अक्टूबर, गुरुवार - पापांकुशा एकादशी व्रत

23 अक्टूबर, शुक्रवार - प्रदोष व्रत

25 अक्टूबर, रविवार - व्रत की पूर्णिमा, कोजागिरी पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा

26 अक्टूबर, सोमवार - स्नानदान की पूर्णिमा

27 अक्टूबर, मंगलवार - कार्तिक कृष्णपक्ष आरंभ

29 अक्टूबर, गुरुवार - संकष्टी चतुर्थी, करवा चौथ

31 अक्टूबर, शनिवार - स्कन्दषष्ठी

शुभ मुहूर्त अक्टूबर 2026

1 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (दिन में 12.05 से 13.30)

2 अक्टूबर, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण (सवेरे 9.15 से 10.15)

5 अक्टूबर, सोमवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (सवेरे 9.05 से 10.40 के बीच)

8 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 12.30 से 13.30)

10 अक्टूबर, शनिवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 7.35 से 9.15)

11 अक्टूबर, रविवार- वाहन मशीनरी क्रय, पूंजी निवेश नवरात्री घट स्थापना (सवेरे 9.30 से 12.15, दिन में 1.35 से 3.15, सायं 6.30 से 9.10)

12 अक्टूबर, सोमवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन (सवेरे 9.00 से 10.15 सायं 6.30 से 7.30)

13 अक्टूबर, मंगलवार - पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (11.30 से 12.30 दिन में)

14 अक्टूबर, बुधवार - पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (सवेरे 10.40 से 12.15)

15 अक्टूबर, गुरुवार - पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (दिन में 11.55 से 13.30)

19 अक्टूबर, सोमवार - दुर्गाष्टमी (सवेरे 9.15 से 10.30, दिन में 15.30 से 18.30)

20 अक्टूबर, मंगलवार - वाहन मशीनरी क्रय, पूंजी निवेश, महानवमी (सवेरे 9.30 से 11.30)

विजयदशमीं पर्व (शस्त्र पूजन 11.30 से 1.35)

21 अक्टूबर, बुधवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, वाहन मशीनरी क्रय, पूंजी निवेश (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन)

22 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, जातकर्म, नामकरण, पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (सायं 16.30 से 19.30)

26 अक्टूबर, सोमवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (सवेरे 9.15 से 10.40, दिन में 15.30 से 18.30 सायं)

28 अक्टूबर, बुधवार - अन्नप्राशन (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन)

30 अक्टूबर, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, पूंजी निवेश, वाहन मशीनरी क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 12.30 से 13.30)

31 अक्टूबर, शनिवार - वाहन क्रय, पूंजी निवेश (दोपहर 13.30 से 16.30)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

नवम्बर 2026 के व्रत पर्व

1 नवम्बर, रविवार - अहोई अष्टमी

5 नवम्बर, गुरुवार - रम्भा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी

6 नवम्बर, शुक्रवार - प्रदोष व्रत, धनतेरस, धनत्रयोदशी, धनवंतरी पूजन

7 नवम्बर, शनिवार - रूप चौदस, नरक चतुर्दशी

8 नवम्बर, रविवार - दीपावली पर्व

9 नवम्बर, सोमवार - स्नानदान, श्राद्ध की सोमवती अमावस्या

11 नवम्बर, बुधवार - भ्राता द्वितीया, भाईदूज, चित्रगुप्त पूजा

14 नवम्बर, शनिवार - सौभाग्य पंचमी, पं. जवाहर लाल नेहरू जयंती

16 नवम्बर, सोमवार - सूर्य की वृश्चिक संक्रान्ति

17 नवम्बर, मंगलवार - गोपाष्टमी

18 नवम्बर, बुधवार - अक्षयनवमी, आंवला नवमी

20 नवम्बर, शुक्रवार - प्रबोधिनी एकादशी व्रत, देवोत्थान एकादशी (स्मार्त)

21 नवम्बर, शनिवार - प्रबोधिनी एकादशी व्रत, देवोत्थान एकादशी (वैष्णव)

22 नवम्बर, रविवार - रवि प्रदोष व्रत

23 नवम्बर, सोमवार - बैकुण्ठ चतुर्दशी

24 नवम्बर, मंगलवार - स्नानदान की पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, गुरूनानक जयन्ती

27 नवम्बर, शुक्रवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

शुभ मुहूर्त नवम्बर 2026

5 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, जातकर्म, नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (सवेरे 6.10 से 7.35, दिन में 12.05 से 13.35)

6 नवम्बर, शुक्रवार - कुबेर पूजन, धनवंतरी पूजन, जातकर्म, खेत जोतना, बीज बोना, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.40 दिन में 12.05 से 13.30, रात्री 9.15 से 10.15)

8 नवम्बर, रविवार - दीपावली पर्व, लक्ष्मी पूजन प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में, दिन में 13.30 से 15.15, सायं 18.10 से रात्री 21.15)

9 नवम्बर, सोमवार - गोवर्धन पूजन, अन्नकूट महोत्सव (सवेरे 9.30 से 10.30, सायं 15.30 से 18.30)

10 नवम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.30 से 12.15 दिन)

11 नवम्बर, बुधवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.05)

16 नवम्बर, सोमवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन (सवेरे 9.15 से 10.30)

17 नवम्बर, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.30 से 10.30)

20 नवम्बर, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, देवप्रबोधिनी एकादशी देव पूजन (सूर्योदय से सवेरे 10.30, दिन में 12.15 से 13.35, रात्री 21.05 से 22.10)

21 नवम्बर, शनिवार - गृहप्रवेश, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा (सवेरे 7.30 से 9.15 दोपहर 13.30 से 16.30)

22 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)

25 नवम्बर, बुधवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सूर्योदय से सवेरे 9.15 तक, दिन में 10.35 से 12.15, सायं 16.30 से 18.10)

26 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सवेरे 6.10 से 7.45, दिन में 12.15 से 13.35, सायं 16.30 से 18.15)

28 नवम्बर, शनिवार - जीर्णगृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (दिन में 13.30 से 16.30)

30 नवम्बर, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.00 से 10.30)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसम्बर 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

दिसम्बर 2026 के व्रत पर्व

1 दिसंबर, मंगलवार - कालभैरव अष्टमी

4 दिसंबर, शुक्रवार - उत्पत्ति एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

6 दिसंबर, रविवार - रवि प्रदोष व्रत

7 दिसंबर, सोमवार - मास शिवरात्री व्रत

8 दिसंबर, मंगलवार - स्नानदान, श्राद्ध की अमावस्या

9 दिसंबर, बुधवार - मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष आरंभ

15 दिसंबर, मंगलवार - स्कन्दषष्ठी

16 दिसंबर, बुधवार - सूर्य की धनु संक्रान्ति

17 दिसंबर, गुरुवार - दुर्गाष्टमी

20 दिसंबर, रविवार - मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती

21 दिसंबर, सोमवार - सोम प्रदोष व्रत

22 दिसंबर, मंगलवार - पिशाचमोचन श्राद्ध

23 दिसंबर, बुधवार - श्रीदत्तात्रेयजयन्ती, स्नानदान व्रत की पूर्णिमा

25 दिसंबर, शुक्रवार - क्रिसमस-डे, स्व.अटल विहारी वाजपेयी जयन्ती

26 दिसंबर, शनिवार- संकष्टी चतुर्थी व्रत

31 दिसंबर, गुरुवार - नववर्ष 2027 की पूर्व संध्या

शुभ मुहूर्त दिसम्बर 2026

1 दिसंबर, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.10 से 12.30 दिन में)

3 दिसंबर, गुरुवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, गृहप्रवेश, मुण्डन, विद्यारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सवेरे 6.15 से 10.45 के बीच प्रारंभ)

4 दिसंबर, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ कर्णवेध, चौलकर्म, गृहप्रवेश, मुण्डन, विद्यारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सूर्योदय से सवेरे 10.40 के बीच प्रारंभ)

5 दिसंबर, शनिवार - अक्षरारंभ, गृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.30 से 9.15, दिन में 13.30 से 16.30 के बीच)

7 दिसंबर, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 7.45 के बीच प्रारंभ करना)

11 दिसंबर, शुक्रवार - विद्यारंभ (सवेरे 8.00 से 10.15 के बीच)

12 दिसंबर, शनिवार - गृहारंभ, भूमिपूजन, गृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 13.30 से 16.30 के बीच)

13 दिसंबर, रविवार - देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में)

14 दिसंबर, सोमवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, गृहप्रवेश, मुण्डन, विद्यारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सवेरे 9.15 से 10.35, दिन में 15.15 से 18.15 के बीच)

16 दिसंबर, बुधवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन (सवेरे 10.30 से 12.15)

19 दिसंबर, शनिवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.30 से 9.15 के बीच प्रारंभ)

20 दिसंबर, रविवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.00 से 11.30 दिन)

21 दिसंबर, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.00 से 11.30 दिन)

22 दिसंबर, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.00 से 11.30 दिन)

26 दिसंबर, शनिवार- खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 13.30 से 16.30)

30 दिसंबर, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना , नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

15 दिसंबर से धनुसंक्रांति होने से अन्य मुहूर्त नहीं हैं।

क्या कमजोर चंद्रमा व्यक्ति को बीमार बनाता है? - ज्योतिषीय दृष्टिकोण..



वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा मन, भावनाओं, स्मरण शक्ति, नींद, मानसिक शांति, माता, शरीर के जल तत्व और रक्त में द्रव संतुलन का कारक माना गया है। जब जन्मकुंडली में चंद्रमा कमजोर, पीड़ित या पाप ग्रहों (राहु, केतु, शनि या मंगल) से प्रभावित होता है, तब व्यक्ति के जीवन में मानसिक और भावनात्मक असंतुलन देखने को मिल सकता है।

ध्यान रहे कि ज्योतिष किसी बीमारी का चिकित्सीय निदान नहीं है। किसी भी शारीरिक या मानसिक बीमारी के लक्षण होने पर योग्य डॉक्टर से जांच और उपचार आवश्यक है। ज्योतिष केवल संभावित प्रवृत्तियों और जीवनशैली सुधार के संकेत दे सकता है।

कमजोर चंद्रमा के संभावित प्रभाव

1. मन में बेचैनी, चिंता और तनाव.
2. निर्णय लेने में कठिनाई
3. अनिद्रा या बार-बार नींद टूटना.
4. अत्यधिक भावुकता या मानसिक अस्थिरता
5. आत्मविश्वास में कमी
6. भय, भ्रम या नकारात्मक विचारों की अधिकता
7. शरीर में जल तत्व के असंतुलन से जुड़ी कुछ समस्याओं की प्रवृत्ति

यदि चंद्रमा अधिक पीड़ित हो

जब चंद्रमा राहु, केतु या शनि से अत्यधिक प्रभावित हो और साथ ही अन्य ग्रहयोग भी प्रतिकूल हों, तो व्यक्ति मानसिक तनाव, अवसाद या अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकता है। लेकिन केवल एक ग्रह या एक योग देखकर यह कहना कि व्यक्ति निश्चित रूप से गंभीर मानसिक रोग से ग्रस्त होगा, उचित नहीं है।

हस्तरेखा में चंद्र पर्वत का महत्व

हस्तरेखा शास्त्र में चंद्र पर्वत कल्पनाशक्ति, संवेदनशीलता और मानसिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। यदि जीवन रेखा से कोई शाखा चंद्र पर्वत की ओर जाती है, तो कुछ परंपरागत हस्तरेखा मत इसे जीवन के किसी चरण में मानसिक तनाव, विदेश यात्रा या कल्पनाशील स्वभाव से जोड़ते हैं। इसे अकेले आधार बनाकर गंभीर मानसिक रोग का निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

कमजोर चंद्रमा के ज्योतिषीय उपाय

1. प्रतिदिन भगवान शिव की उपासना करें।
2. सोमवार को 'ॐ सोम सोमाय नमः' मंत्र की 108 बार जप करें।
3. चंद्रमा को जल या दूध मिश्रित जल का अर्घ्य दें (परंपरा अनुसार)।
4. माता का सम्मान करें और उनका आशीर्वाद लें।
5. सफेद वस्तुओं का दान करें (चावल, दूध, सफेद वस्त्र आदि)।
6. नियमित ध्यान और पर्याप्त नींद लें।

निष्कर्ष- कमजोर चंद्रमा व्यक्ति के मन और भावनात्मक संतुलन को प्रभावित कर सकता है, जिससे मानसिक तनाव या कुछ स्वास्थ्य समस्याओं की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। लेकिन किसी भी बीमारी का अंतिम निर्णय केवल ज्योतिष या हस्तरेखा के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। सही निदान के लिए चिकित्सकीय परामर्श आवश्यक है, जबकि ज्योतिष जीवन में संतुलन और सुधार के उपाय सुझाने का माध्यम हो सकता है।

- ज्योतिषाचार्य
चिकित्सा हस्तरेखा विशेषज्ञ
सचिन गंधर्व

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक जोकि वर्तमान में इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448

खाते का नाम - जीवन वैभव

आय एफ एस सी कोड - IDIB000B796

ब्रांच कोड - 4197

MICR code - 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण **5000/- 500/- 200/-**

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनाँक .....

चैक क्रमांक ..... दिनाँक .....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका "जीवन वैभव" के बारे में आपकी रायः-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पताः
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्कः 9425008662
ईमेलः hcp2002@gmail.com

नोटः उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

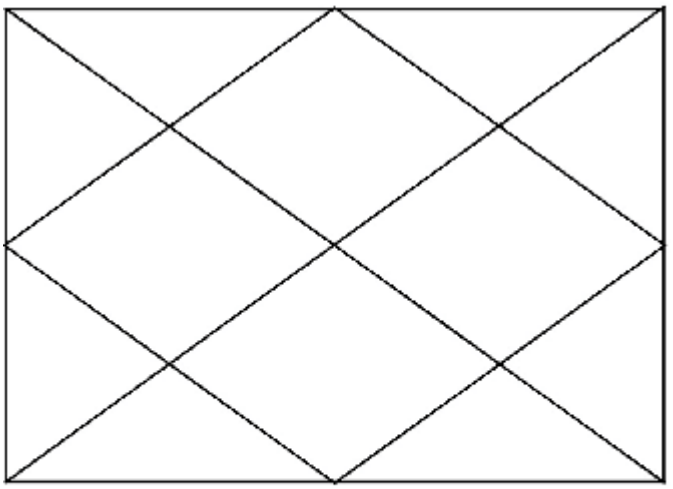
नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....



कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

जीवन मूल्य और नैतिक शिक्षा
लेखक - डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
मूल्य 150 रुपये
अपनी प्रति सुरक्षित करावें-

फलित ज्योतिष शिक्षा के लिए
पाराशरी ज्योतिष फलित कोर्स
बेसिक कक्षा हेतु सम्पर्क करें
व्यवस्थापक जीवन वैभव
15 ए, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी.नगर भोपाल, म.प्र.
मोबाईल- 9425008662

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल
शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक
डाक/ कोरियर से जीवन वैभव
कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के
लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।
एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/
कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये
भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।
लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन-I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

समृद्ध किसान समृद्ध प्रदेश

किसान कल्याण वर्ष 2026

बलराम कृषि महोत्सव

15 जुलाई से 13 नवंबर 2026



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मध्यप्रदेश में आधुनिक तकनीक और नवाचारों से कृषि समृद्धि की पहल



किसान संवाद
सुझावों का आदान-प्रदान

सम्मान का गौरवपूर्ण मंच
उत्कृष्ट किसान, विद्यार्थी एवं सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स का सम्मान

आधुनिक कृषि का प्रदर्शन
उन्नत कृषि तकनीकों की नवीनतम जानकारियां

कृषि और संस्कृति का अनुपम संगम
देशभक्ति गीत, लोकनृत्य और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

किसानों के हित में विभागों द्वारा कार्य

उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण
उद्यानिकी का रकबा 30 लाख हेक्टेयर एवं उत्पादन 490 लाख मीट्रिक टन बढ़ाने का लक्ष्य

राजस्व
कृषि भूमि के भू-अर्जन पर बाजार दर से 4 गुना मुआवजा देने का निर्णय

पीएम किसान सम्मान, मुख्यमंत्री किसान कल्याण में सालाना ₹12000 की सहायता

ऊर्जा
किसानों को ₹5 में बिजली के स्थाई कनेक्शन एवं 10 हॉर्सपावर तक ऊर्जा प्रभार पर सब्सिडी

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा देने हेतु 60% तक प्रोत्साहन

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा
पीएम कुसुम योजना में 32 लाख किसानों को सोलर पंप देने का लक्ष्य

कुटीर एवं ग्रामोद्योग
महिला एवं ग्रामीण युवाओं को कुटीर उद्योग से जोड़कर स्वरोज़गार को बढ़ावा

मध्यप्रदेश पर्यटन
ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन
1000 होम-स्टे बनाने का लक्ष्य

जनसम्पर्क
कृषक कल्याणकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार

पशुपालन एवं डेयरी
दुग्ध संकलन प्रतिदिन 12 लाख लीटर से बढ़ाकर 50 लाख लीटर करने का लक्ष्य

सहकारिता
5,562 दुग्ध समितियों का वित्तीय समावेशन कर 83 हजार सदस्यों के जिला सहकारी बैंकों में खाते खोले गए

0% ब्याज दर पर फसल ऋण, भुगतान के लिए साल भर का समय

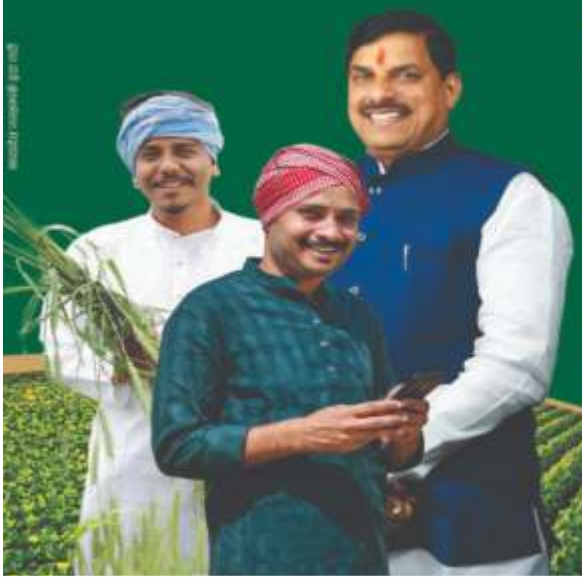
औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन
कृषि-आधारित उद्योगों की स्थापना पर 50% तक सब्सिडी

मछुआ कल्याण तथा मत्स्य विकास
₹6000 करोड़ के मत्स्य निर्यात का लक्ष्य, ₹12400 करोड़+ का आ रहा निवेश

जल संसाधन
55 लाख हेक्टेयर में सिंचाई को वर्ष 2028-29 तक 100 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य

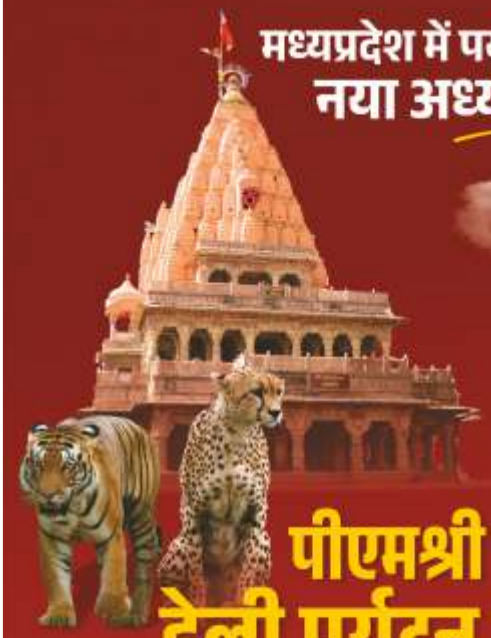
नर्मदा घाटी विकास
नर्मदा बेसिन प्रोजेक्ट्स के माध्यम से सिंचाई परियोजनाओं को वित्तपोषण

संस्कृति
श्रीअन्न, ग्रामीण व्यंजन एवं स्थानीय परम्पराओं को प्रोत्साहन



D 19211 / 26

मध्यप्रदेश में पर्यटन का नया अध्याय







पीएमश्री हेली पर्यटन सेवा

तेज, सुरक्षित और यादगार यात्रा का अनूठा अनुभव



भोपाल
झीलों की नगरी, मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल आधुनिक शहरी विकास और सांस्कृतिक विरासत का केन्द्र

ओरछा
यहां भगवान राम स्वयं इस नगर के राजा के रूप में विराजे हैं





चंदेरी
प्राचीन किलों और हथकरघा चंदेरी साड़ियों के लिए विश्व प्रसिद्ध

जबलपुर
भेड़ाघाट की संगमरमर की घाटी, धुआंधार जलप्रपात और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्वितीय अनुभव





मैहर
त्रिकूट पर्वत पर स्थित मां शारदा देवी मंदिर आस्था का प्रमुख केंद्र

चित्रकूट
भगवान श्रीराम के वनवास से जुड़ा, आध्यात्मिक महत्व का अद्भुत स्थल





बांधवगढ़ नेशनल पार्क
सबसे अधिक संख्या में बाघों की उपस्थिति। प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन का अद्वितीय स्थल

कान्हा नेशनल पार्क
सबसे प्रसिद्ध टाइगर रिज़र्व समृद्ध वन्यजीव और जैवविविधता का गढ़





इंदौर
मध्यप्रदेश की व्यापारिक राजधानी होने के साथ-साथ स्वच्छता का सिरमौर इंदौर अपने राजवाड़ा सराफा और आधुनिक जीवन के लिए प्रसिद्ध है



उज्जैन
भगवान महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग और सिंहस्थ कुंभ जैसे विशाल आध्यात्मिक आयोजन के लिए विश्वविख्यात



ओंकारेश्वर
ज्योतिर्लिंग के दिव्य दर्शन और अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव

आध्यात्मिक सर्किट

इंदौर - उज्जैन - ओंकारेश्वर - इंदौर	₹30,000
इंदौर - उज्जैन - इंदौर	₹14,500
इंदौर - ओंकारेश्वर - इंदौर	₹18,000

हेरिटेज सर्किट

भोपाल से चंदेरी	₹5,500	चंदेरी से ओरछा	₹2,750
भोपाल से ओरछा	₹6,500	जॉय राइड	₹3,500
भोपाल - ओरछा - भोपाल	(विशेष पैकेज)		₹14,500

वाइल्डलाइफ एवं आस्था सर्किट

जबलपुर - मैहर	₹5,000	जबलपुर - बांधवगढ़	₹6,500
जबलपुर - चित्रकूट	₹7,500	जबलपुर - कान्हा	₹6,000
मैहर - चित्रकूट	₹5,000	बांधवगढ़ - कान्हा	₹7,000



एक संपूर्ण यात्रा पैकेज

- गंतव्य स्थल पर ठहरने की व्यवस्था से लेकर भोजन, स्थानीय टैक्सी तक हर सुविधा का पैकेज
- मंदिर दर्शन की पूर्व निर्धारित व्यवस्था, पर्यटन अनुभव को और खास बनाने के लिए गाइड
- हेलीपैड तक पिक-अप और ड्रॉप की सुविधा

बुकिंग | www.flyola.in
air.irctc.co.in/flyola
www.transbharat.in

D 19211 / 26